25,156
18-11-43.

✓

" धमालें "

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

Dhamalen

091.954
R142 DH

25156
66

धमाल - १,

सत मारग चाल उबर ज्यासी।
धन जोबन डूँगर को रै पाणी ढ़लतो २ ढ़ल ज्यासी।
सत मारग चाल उबर ज्यासी।
मात पिता की सेवा करले बँचतो २ बँच ज्यासी।
सत मारग चाल उबर ज्यासी।
मन को साफ काछ को साचो दूदाँ धोयो होय ज्यासी।
सत मारग चाल उबर ज्यासी।
सांझ सवेरी हर नै भजले लख चोरासी कट ज्यासी।
हर की ले ओट उबर ज्यासी।

धमाल - २,

उड़ती कूँजड़ियाँ सनेसो म्हेरो लेती जाज्यो अे।
सासू जी नै करज्यो कूँजा पगाँ अे लागणी
बाले मोती देवरिये नै प्यार करज्यो अे। उड़ती कूँजरियाँ...।
जिठाणी नै दीज्यो कूँजा पगाँ अे लागणी
छोटोड़ी देराणी नै असीस दीज्यो अे। उड़ती कूँजरियाँ...।
मारू जी नै करज्यो कूँजाँ जाजा अे ओल़मा
साथ आवे तो बाँ नै लेती आज्यो अे। उड़ती कूँजरियाँ...।

धमाल - ३,

✓ पायो ना रे स्याम मोत डोली पायो ना।
बागाँ में ढूँढ बगीचाँ में ढूँढ्यो कोयल होय कर उड़ आई।
पायो ना रे स्याम मोत गेली।
वणखंड ढूँढ डूँगराँ में ढूँढ्यो हिरणी होय मैं फिर आई।

पायो ना मेरो स्याम खूब डोली पायो ना।
गंगा में ढूंढर जमना में ढूंढ्यो मछली होय मैं तिर आई।
पायो ना ...।
मथरा में ढूंढर गोकल ढूंढ्यो बिनराबिन मैं छाण आई।
पायो ना मेरो स्याम खूब डोली...।
मैलाँ में ढूँढ मालियाँ में ढूंढ्यों नागण होय मैं तो फिर आई।
पायो ना ...।
अेक दिन स्याम मिल्यो कूंजन में मैं पापण मुख फेर गई।
पायो ना मेरो स्याम मोत डोली पायो ना।

धमाल-४,

सारो नगर भीज रह्यो रंग में।
चाँद सुरज दोनू होली खेलै, जाँरी किरण डूब रही जल में।
सारो नगर भीज रह्यो रंग में।
राम चनर जी होली खेलैं सीता जी के संग में।
सारो नगर भीज रह्यो रंग में।
किसन मुरारी फाग रमै रै राधा रुकमण संग में।
सारो नगर भीज रह्यो रंग में।
सिव संकर जी होली खेलैं पारबती के संग में।
सारो नगर भीज रह्यो रंग में।
पिव-मारूणी होली खेलें फाग मची घर२ में।
सारो सहर भीज रह्यो रंग में।

धमाल-५,

√ ब्रज मांडल देस दिखादे रसिया ब्रज मांडल।
थारी रै बिरज में कांई२ निपजै, धोली२ गाय सुरंग बाछ्या
ब्रज मांडल देस दिखावो रसिया ब्रज मांडल।

थारी रै बिरज में कांई २ निपजै बाली २ नार मरद रसिया।
ब्रज मांडल़ देश दिखावो रसिया ब्रज मांडल़।
थारी रै बिरज में कांई २ निपजै, राधा सी नार किसन रसिया।
ब्रज मांडल़ देश दिखा यो रसिया ब्रज मांडल़।
थारी ओ बिरज में कांई २ निपजै दूद, दई मांखन डलिया।
ब्रज मांडल देश दिखादे रसिया ब्रज मांडल़।
थारी रै बिरज में कांई २ निपजै जमना री धार तिरैं मछिया
थारी रै बिरज में कांई निपजै बोलै रै मोर फटै छतिया।
ब्रज मांडल़ देश दिखादे रसिया ब्रज मांडल़।

धमाल-६

बंदा गरब करयो सोई हारयो।
गरब करयो डूंगर री चिरमी, काल़ो मुख कर डारयो।
बंदा गरब करब करयो सोई हारयो।
गरब करयो रतनागर सागर खारो नीर कर डारयो।
बंदा गरब करयो सोरी हारयो।
गरब करयो बण खंड के मुरलै पाँव हीण कर डारयो।
बीरा गरब करयो सोरी हारयो।
गरब करयो गिगनापत चंदै कालो रै दाग लगायो।
भाई गरब करयो सोई हारयो।
गरब करयो इसमानी सूरज जाँ नै घैण घुवायो।
नर जो गरब्यो सोरी हारयो।
गरब बिण चकवे-चकवी रैन बिछोवो डारयो।
भोल़ा गरब करयो सो हारयो।
गरब करयो लंकापत रावण मार धरण में डारयो।
लोगो जो गरब्यो बो हारयो।
गरब करयो दुरजोदन राजा सारो कुटम खपायो।
नर गरब करयो सोरी हारयो।

भूल चूक नर गरब न करिये गरब भैर हूं खारो।
नर जौ गरब्यो वो हार्यो।

धमाल- ७,

✓ उठ मिल ले भरथ भाई हर आयो उठ मिल ले।
हर आयो रे लखण आयो उठ मिल ले।
ज्यूं पून्यू को सो चांद सिखर आयो उठ मिल ले।
भुजा रे पसार मिल्या दोन्यू भैया नैणां में
नीर ढुळक आयो उठ मिल ले। उठ मिल ले भरथ..।
के र खायो भैया कांई रे बिछायो कैसी र बिपत
भुगत आयो। उठ मिल ले...।
बनफळ खाया भैया पांन बिछाया दोरी र
बिपत भोग आयो। उठ मिल ले...।
तुळसीदास भजो भगवाना रावण मार राम आयो।

धमाल- ८,

✓ दोय नैणां की प्रीत निभावो रसिया दोय नैणां
की। थारे र खातर ढोला मैल चिणायो
निरखण के मिस आवो रसिया दोय नैणां की।
थारे र खातर मारू बाग लगायो घूमण के मिस
आवो रसिया दोय नैणां की।
दोय नैणां की प्रीत निभावो रसिया दोय नैणां की।
थारे र खातर ढोला माळा गूंथी पहरण के
मिस आवो रसिया दोय नैणां की।
थारे र खातर ढोला पाग रंगाई बांधण के
मिस आवो रसिया दोय नैणां की।
दोय नैणां की प्रीत निभावो रसिया दोय नैणां की।

थारे र खातर सायबा बागो मे सिमायो पैरण के मिस आवो रसिया दोय नैणां री।
ऊरर मरूँ खड़ी मैं तरसूँ नैणां दरस दिखावो रसिया दोय नैणां री। दोय नैणां री प्रीत निभावो रसिया दोय नैणां री।

धमाल-९,

पल्लो छोड़ दे दुसासण मेरी साड़ी को।
भरी रे सभा में ना कोई बोलत मै मानत मतहरी को।
पल्लो छोड़ दे दुसासण मेरी साड़ी को।
भीसम, द्रोण, करण चुप बैठ्या, अंस निकल गयो नाड़ी को।
सभा सभी चितराम लिखीसी मै मानत अत्याचारी को।
पल्लो छोड़ दे दुसासण मेरी साड़ी को।
लख भेदी अरजन चुप साधी, बल घट्यो भीवं बलकारी को।
थाँ बिन ना कोई हितू साँवरा, सतरासो द्रुपद दुलारी को।
पल्लो छोड़दे दुसासण मेरी साड़ी को।
'बदरीलाल' दरस द्यो आकर, ध्यान धरयो बनवारी को।

धमाल-१०,

मत पाप करै पिसतावैगो।
तज कर नीती करत अनीती, कद नहीं सुख पावैगो।
देख सभा में अँधो लजैगो, भीसम द्रोण लजावैगो।
बिदर भगत की काण घटैगी, जेठ करण सरमावैगो।
पाँडू सुत निरबल नहीं होग्या, उण हाथाँ लाज गमावैगो।
भरी सभा में भीवं पछाड़ै, अरजन धनस चढ़ावैगो।
तिरिया सतायाँ पाप घणेरो, अधरम को फल पावैगो।
मत पाप करै दुख पावैगो।

धमाल-११,

होली खेलै रे कान गोपियन में।
गोपियन में रै कानू अैसो२ सोरै ज्यूँ चंदो तारन में।
होली खेलै रै कान गोपियन में।
गोपियन में रै कानू अैसो२ सोरै ज्यूँ हीरो मोतियन में।
फाग खेलै रै कान गोपियन में।
गोपियन में रै कानू अैसो२ सोहै ज्यूँ सुवटो बागन में।
रंग खेलै रै कान कूंजन में।
गोपियन में रै कानू अैसो२ सोरै ज्यूँ मिरगो मिरगिन में।
रँग राच्यो रै किसन गोपियन में।
गोपियन में रै कानू अैसो२ सोरै ज्यूँ सुरमू नैनन में।
कानू खेलै रै छोरीण्डी गोपियन में।

धमाल-१२,

बरसाणै म्हैल लाडली को बरसाणै।
अेक बरसाणै में बाग लगायो रै,
जैं बिच पेड़ आमली को। बरसाणै...।
अेक बरसाणै में म्हैल चिणायो रै,
जैं बिच रंग बादली को। बरसाणै...।
सब सखियाँ सिणगार सजायो,
सोरै रूप काँचली को। बरसाणै...।
ग्वाल बाल संग मोहन आयो,
बो सोखीन कामली को। बरसाणै...।
'रामसखी' दरसण की भूखी,
'सुन्दर स्याम' लगै नीको। बरसाणै...।

धमाल-१३,

देबी अम्बका नै पूजण जाऊँगी।
पान, सुपारी, धजा, नोरेलो, देबी कै भेंट चढाऊँगी।
धूप दीप परसाद आरती मोदक भोग लगाऊँगी।
ऊँचै डूँगर बण्यो रै देवरो, म्हाँ जाकर जस गाऊँगी।
'रामसखी' थारा जस गावै, चरण कमल चित लाऊँगी।

धमाल-१४,

कैयाँ जाऊँ रै सांवरिया थारी इर नगरी।
थारी नगरी में काना कीच घणेरो,
पाँव चलूँ भीजूँ सगळी। किस बिद आऊँ रै...।
थारी नगरी में साँवरा जमना बहत है,
गोपियन नीर भरैं गगरी। कियां आऊँ रै...।
थारी नगरी में काना डांण लगत है,
स्याम करत झगड़ा झगड़ी। क्योंकर आऊँ रै...।
थारी नगरी में काना फाग मची है,
मोहन रोक लई डिगरी। किंकर आऊँ रै...।
लाल गुलाल कटोरा भरिया,
केसर रँग भरी गगरी। किंकर आऊँ रै...।
पिचकारी भर मोहन मारत,
भीज ज्याय चूनड़ घगरी। किंकर आऊँ रै...
म्हौरै पर रँग हँस हँस डारत,
मोहन जाय दूर भगरी। किंकर आऊँ रै...।
'रामसखी' थारो जस गावै, हिरदै में थारो पगरी।
किस बिद आऊँ रै कानूडा थारी इरनगरी।

धमाल-१५,

लिछमण कै रै बाण लग्यो सगती।
कै तो जीवावै सीता रै सतवंती,
कै तो जीवावै हणमान जती। लिछमण कै...।
काहे सूँ जीवावै सीता रै सतवंती
काहे सूँ जीवावै हणमान जती। लिछमण कै...।
सत हूँ जीवावै सीता रै सतवंती,
बूँटी हूँ जीवावै हणमान जती। लिछमण कै...।

धमाल-१६,

सुमरण कर पैलाँ गणपत को।
अेक दंत अर सूँड सुरँगी,
सीस मुकट सोहै सुबरण को। सुमरण कर...।
बांई रै भुजा रिध-सिध को बासो,
हाथ सोहै लाडू मोदक को। सुमरण कर...।

नोट :— जैसे स्त्रियाँ माङ्गलिक गीतों को 'बिनायक' से आरंभ करती हैं, वैसे ही ग्रामीण लोग धमालों के आदि में इस धमाल को गाते हैं।

धमाल-१७,

राजा बल कै रै द्वार मची होली।
कै रै बरस को थारो कँवर कन्हैयो,
कै रै बरस की या राधे गोरी। राजा बल कै...
बारा रै बरस को मेरो कँवर कन्हैयो,
सात बरस की मेरी राधा गोरी। राजा बल कै...
कांई रै कमावै थारो कँवर कन्हैयो,

कांई रै कमावै थारी राधा गोरी। राजा बलदै...
गऊ तो चरावै म्हारो कँवर कन्हैयो,
दही तो बिलोवै म्हारी राधा प्यारी। राजा बलदै...

धमाल १८,

रंग बरसै गुलाबी दोय नैणा मैं।
तिस तो लागै तो काना मेरै घर आइये रै
ठंडै जल की झारी मेरै पैंडा मैं।
भूख तो लागै तो काना मेरै घर आइये रै
मखन को कटोरो मेरी खुड़िया मैं।
तावड़ो लागै तो काना मेरै घर आइये रै
थानै तो छिपाऊं मेरै घूंगट मैं।
जाड़ो तो लागै तो काना मेरै घर आये रै।
थांनै तो दपलाऊं मेरी गुदड़ी में।
रामलली कहै दोऊ करजोड़यां थांनै तो
छिपाऊं मेरी छतियन में।

धमाल-१९,

मानत ना जसोदा थारो गिरधारी।
घर का छोड़ै मैल मालिया,
गूजरी की झूंपड़ी लगै रे प्यारी। मानत ना...
घर में कोरये माखन मिसरी,
गूजरी की छाछ लगै रे प्यारी। मानत ना...
घर नहीं ओढ़ै साल दुसाला,
गूजरी की गूदड़ी लगै रै प्यारी। मानत...
घर नहीं जीमै यो लाडू पेड़ा,
गूजरी की खीचड़ी लगै रै प्यारी। मानत...

घर पोढ़ै नहीं पिलँग ढ़ोलियाँ,
गूजरी की मांचली लगै रे प्यारी। मानत...।
घर री बातां खारी लागैं,
गूजरी की बात लगै रे प्यारी। मानत...।

धमाल-२०,

हणमत खोड़ियो यो नांव अमर करग्यो रे।
सुगरीवा संग करी रे दोसती,
रिखमुख परबत पर डटग्यो। हणमत...।
राम मिलाय राज-पद दीन्यू,
मितराई उजली करग्यो। हणमत...।
रामचनर जी रो पायक बणियो,
भरी रे सभा बीड़ो गटक्यो। हणमत...।
लंका ऊपर करी रे चढ़ाई।
सत जोजिन समदर तिरग्यो। हणमत...।
सीता नै सेरनाणी दीनी,
असोक बण चोपट करग्यो। हणमत खोड़ियो...।
लंका बाली अकसे मारी,
रावण नै सिरी-रत करग्यो। हणमत...।
बूंटी ल्यायो रे लखन जीवायो,
परबत नै चिटली चकग्यो। हणमत...।
राकस मारया रे भगत उबारया,
अंजनी की कूख सफल करग्यो।
हणमत खोड़ियो यो नांव अमर करग्यो रे।

धमाल-२१,

जसरथ कै यो लिछमण बाल जती।
किण राजा कै रे सीता जलमी,
किण राजा कै पारबती। जसरथ कै...।
जिनक राय कै या सीता जलमी,
हेमाचल कै या पारबती। जसरथ कै...।
किण राजा नै सीता परणी,
किण राजा नै पारबती। जसरथ कै...।
रामचनर नै या सीता परणी,
स्योसंकर नै या पारबती। जसरथ कै...।
कै राख्यो सीता रे पारबती,
कै गुण उजलो यो बाल जती। जसरथ कै...।
सत राख्यो सीता रे पारबती,
जत राख्यो इण बाल जती। जसरथ कै...।

धमाल-२२,
(बालचर गीत)

जागो रे रे टाबरियो थे छो जुग में साचा बीर।
दिनड़ो उग्यो थे बेगा जागो,
मात-पिता कै पांवां लागो,
सत गुण को थे पीज्यो नीर। जागो रे रे...।
गुरू जणां को आदर करज्यो,
बिद्या पढ़बा में चित दीज्यो
देस भक्ति अर धरम करम में, रीज्यो थे सदा गंभीर।
दुखी जणां नै हिवड़ै लगाज्यो,
कदे न नीच्यां (दुष्टां) सूँ भय खाज्यो,
दुबलो मन करके मत रोज्यो, सुपनां में भी दीन फकीर।
सिवा प्रताप बणो थे सारा (धू, परलाद) जणो थे सारा

उजला जस होसी जुग थारा,
थौरे ऊपर आस करे छै या धरणी अर धीर। जागो ...।
पाछो पैर कदे मत धरज्यो,
मन घोड़ा नै आगै करज्यो
'सेवा' पण (व्रत) लेलेवो भाइयो, हर नै राखो सीर।
जागो रे रे बालकियो थे छो जुग में साचा वीर।

[illegible]

थारो गंदो गाँव गुवाड़ लागो शरम करो।
फलसे आगे कुरड़ बणायो, गल कचरे रो ढेर लगायो।
आवे मूँडे बास घणी। घणी सरम करो।। थारो सिड रह्यो--।।
खातां भी खावत पीवत सोवत जागत सिड रह्यो बारा मास।
पग र सूग पड़ी नहिं ओलै, भिरा र करती माखी डोलै
देख्याँ उलटी होय

धमाल- २४,

२५/३/४३. हँस बोल थोड़ी रै जिंदगानी।
या काया थारी थिर ना रैवैगी,
जायगी अंत निमाणी।
ई काया की बंदा ढेरी रै होगी,
गरद उड़ैगी असमानी।
ईंण काया पर बंदा दूब रै उगैगी,
गऊ रै चरैगी मसतानी।
तूँ मत जाँणै बंदा जाऊँ रै अेकलो,
जासीं राजा रै राणी।
धरती जागी अंबर जागो,
जांगाँ पूँनर पाँणी।

धमाल- २५,

मानत ना जसोदा थारो गिरधारी।
घरॉं तो करीजै आँ रै म्हैल मालिया,
गूजरी की झूँपड़ी लगै रै प्यारी।
घर का तो छोड़ै काँनूं सेाड़ पथरणा,
गूजरड़ी की गूदड़ी लगै रै प्यारी।

धमाल - २६,

रद करग्यो रै जाट जुलाँणी को।
बाल-समद लूट सिंघ लुहारू लूटी,
लूटी लूटी हाट सिवाँणी की।
बड़वो बी लूट बड़ोपल लूटी
बाली बाली हाट मँगाली की।

धमाल - २७,

जल भरण देव की आई।
कूण-सै घाटँ भरै रै देव की,
कूँण-सै जसोदा माई।
उरलै घाटँ भरै रै देव की
परलै जसोदा माई।
बाँथूँ बाँथ मिली रै दोन्यूँ मैंणाँ।
कूँजाँ ज्यूँ कुरलाई। जल भरण...।
के दुख लाग्यो मैंणाँ सास रै नणद को,
के थारै पीव सताई।
ना दुख लाग्यो म्हारै सास नणद को,
ना म्हारै पीव सताई।
पाँच पुतर राजा कंस मराया,
छट्ठो लग रह्यो साई।

इण दुख हूँ मैं भई रै दूबली,
यो दुख मर की जाई।
अब थारे जलमे बालको,
गउ गोकल पूँचाई।
'तुलसीदास' भजो भगवाना
हर चिरणा चितल्याई।

धमाल– २८,

कांनाँ दे वो म्हारो चीर मुरारी।
ले म्हारो चीर कदम पर बैठ्यो,
जल बिच खड़ी रै उघाड़ी।
थारो तो चीर राधे थांनै म्हे देस्याँ,
हो ज्यावो जल सैं थे न्यारी।
जल सैं न्यारी कांनां किस बिद होवाँ
आवैर लाज तिहारी।
म्हारी तो लाज राधे किस बिद आवै,
हम तो पुरख थे नारी।

धमाल-२९,

हर नै बण में जाय कुटी रै बणाई।
भोज पतर की बणी रै कुटैया,
चन्नण बल्ली रै लगाई।
रामर लिछमण मिल कर बैठ्या,
सीताँ बात सुणाई।
हरियल बाड़ी मेरी मिरगा चरर जाई।
सीता कहै यो मिरगलो मारो,
इण री चरम मन भाई।
दूर जाय की मिरगो मार्यो,
हो हो कार मचाई।
मार मिरगलो हर घर आया,
सूँनी कुटिया पाई।
"तुलसीदास" भजो भगवाना,
हर चिरणा चित ल्याई।

धमाल- ३०,

लिछमण सीया जी नैं कूँण हड़ी रै।
उड़ उड़ काग कुटी पर बैठें,
सूँनी कुटिया पड़ी रै।
दिवलो जोय कुटी में देखो,
के कोई खूँणें में खड़ी रै।
गिरवर चढ़ सरवर में देखो,
जल में डूब मरी रै।
के बीं नै खाग्या सिंध स्यालिया,
के कोई राकस भखी रै।
के लंकापत रॉवण लेग्यो
के कोई जमीं में बड़ी रै।

धमाल-२९,

हर नै बण में जाय कुटी रै बणाई।
भोज पतर की बणी रै कुटैया,
चन्नण बली रै लगाई।
रामर लिछमण मिल कर बैठ्या,
सीताँ बात सुणाई।
हरियल बाड़ी मेरी मिरगा चरर जाई।
सीता कहै यो मिरगलो मारो,
इण री चरम मन भाई।
हर जाय की मिरगा मार्यो,
हो हो कार मचाई।
मार मिरगलो हर घर आया,
सूँनी कुटिया पाई।
"तुलसीदास" भजो भगवाना,
हर चिरणा चित ल्याई।

धमाल- ३०,

लिछमण सीया जी नैं कूँण हड़ी रै।
उड़ उड़ काग कुटी पर बैठै,
सूँनी कुटिया पड़ी रै।
दिवलो जोय कुटी में देखो,
के कोई खूँणें में खड़ी रै।
गिरवर चड़ सरवर में देखो,
जल में डूब मरी रै।
के बों नै खाग्या सिंघ स्यालिया,
के कोई राक्स भखी रै।
के लंकापत रावण लेग्यो
के कोई जमीं में बड़ी रै।

बण में बिपत पड़ी रै।

धमाल – ३१,

ता२३-३-४३. श्री सूरजमल, माली, पिलानी.

फिरती आवै राम दुहाई ओ पिया।
गढ़ कै लूँमत देख्या रै बानरा,
घर घर रौल मचाई ओ पिया।
लंक सरीसा कोट हमारै,
समद सरीसी खाई ओ पिया।
मेगनाथ-सा पुतर हमारै
कूँम करण सा भाई ओ पिया।
हणमत सिरसा पायक बाँ कै
लिछमण सिरसा भाई ओ पिया।
जलती अगन में कूद पड़ैं बे,
कोट गिणै ना खाई ओ पिया।
जिंण की ज्याँनकी नै थे हड़ ल्याया
था कै कुबद कमाई ओ पिया।

धमाल- ३२,

थारी बनड़ी नै निरखँण आईओबना।
बाँवन म्हैंल छपन दरवाजा,
कूँण-सै म्हैल बढाई बना।
सवा लाख को मैं ल्याई हूँ मूँनड़ो,
घालूँ मुख दिखलाई ओ बना।
नोसैनँदी निवासी नाला,
कूँण सै घाट न्हवाई ओ बना।

धमाल- ३३,

सिसपाल दाय नहीं आवै।
यो सिसपाल चंनेरी को राजा,
मेरै मन नहीं भावै।
मानसरोवर हँसा देख्या,
मेरै काग निजर नहीं आवै।
समदर सेती सीर पड्या है,
नाडूल्याँ कूँण न्हावै।
इँण मुखड़े पर हीरो सोहै।
मूँग्यो कूँण मुलावै।
इँण मुखड़े सैं इमरत चाखत,
मैर कूँण्या नै भावै।

धमाल - ३४,

सिसपालो मैं नाँय बरूँगी।
जे सिसपालै री सुँणूँगी सगाई,
झैर-बिस खाय मरूँगी।
जे सिसपालै रो सुणूँगो ब्यावलो,
जल में डूब मरूँगी।
जे सिसपालै ने मरयो रै सुँणूँगी,
रथ में बैठ चलूँगी।

धमाल - ३५,

मुखड़ा तेरो माँडण धूंगटियो।
किण तो पाली थारी काली रै कोयलिया,
किण पाल्यो हरियल सूवटियो
राणी जी पाली या काली कोयलिया,
राजा जी पाल्यो हरियो सूवटियो।
कांई तो चुगै थारी काली रै कोयली,
कांई तो चुगै हरियो सूवटियो।
चावलिया चुगै म्हारी काली रै कोयलड़ी,
दाल चुगै हरियो सूवटियो।
कांई तो पिवै थारी काली रै कोयलड़ी,
काँयूँ तो पिवै हरियल सूवटियो।
इदड़लो पिवै म्हारी काली रै कोयलड़ी।
पाँणीड़ो पिवै हरियल सूवटियो।

धमाल - ३६,

कस्वोदे मेरा स्याम चनण बिड़लो।

धमाल - ३७,

श्री लादूराम सारोण,
ता० २५-३-४३.

स्यो पूजण आप गोर आई।
कुरै को दिवलो कुरै की बतिया,
कुरै सैं बा जोय ल्याई।
माँटी को दिवलो रूई की बतिया,
चकमक सैं बा जोय ल्याई।

BITS LIBRARY * BITS * PILANI (RAJ.)

धमाल-३८,

नित बरसो मेहा बागड़ में।
बागड़ निपजै मोठ बाजरो,
गिंऊँड़ा निपजै खादर में।
बागड़ निपजैं ऊँट बैलियां,
घुड़ला निपजैं खादर में।
बागड़ निपजैं नारय पदमणी,
मरद मूँछ्याला उदैपर में।
बागड़ निपजै कामल लोवड़ी,
दिखणी चीर उदैपर में।

धमाल-३६,

बसदेव जी की गोद कन्हैयो।
काहे की थारै टोपी सोहै,
काहे को झगलैयो।
रेसम की थारै टोपी सोहै,
साटिन को झगलैयो।
चाँदी की थारै गींडी सोहै,
सोनै को चिरलैयो।

धमाल- ४०,

बूजे भरथ राम कठै अे माई।
झिरमिर झिरमिर मेहा बरसैं,
पूँन चलै पिरवाई।
कूँण बिरछ तलै भीजत हूँगा,
राम लिछमण दोन्यू भाई।
राम बिना मेरी सूँनी अे अजोध्या,
लिछमण बिन ठुकराई।
सीया बिना मेरी सूँनी रसोई
कूँण करै चतराई।
आगै आगै राम चलत है पाछै लिछमण भाई।
बीच बिचालै चलै ज्याँन की,
चित्तर कूँट नै ध्याई।

धमाल- ४१,

सत देख राम लिछमण को।
बारा बरस बन खँड में ताप्यो,
फल नहीं चाख्यो बन को।
बारा बरस सीता सँग डोल्यो,
पाप धरयो ना मन को।
बारा बरस लग गऊ रे चराई,
दूद न पियो गवन को।

धमाल- ४२,

मुनड़ो दे स्याम करूँगी झगड़ो।
कै माँसाँ को थारो घड़्यो रै मूनड़ो
कै माँसाँ को जड़ाव जड़्यो। मुनड़ो दे...।
नो माँसाँ को मेरो घड़्यो रै मूनड़ो,
दस माँसाँ को जड़ाव जड़्यो। मुनड़ो...।
कूँण-सै सहर यो घड़्यो रै मूनड़ो,
कूँण-सै सहर जड़ाव जड़्यो। मुनड़ो...।
जैपर सहर में यो घड़्यो रै मूनड़ो,
दिलड़ी रै सहर जड़ाव जड़्यो। मुनड़ो...।
काहे को थारो घड़्यो यो मूनड़ो,
काहे को रै जड़ाव जड़्यो। मुनड़ो...।
सोनैं को म्हारो घड़्यो रै मूनड़ो,
लख हीराँ को जड़ाव जड़्यो। मुनड़ो...।

धमाल- ४३,

जल जमना पाँणी मेरो कूँण भरै।
होलै होलै चालूँ मेरो नान्यूँ रोवै
बेगी मैं चालूँ तो गगरी झिलकै।
ओवड़ छेवड़ गीदल्यो पाँणी,
बीच मरूँ मेरो जी डरपै।
सिर पर घड़ो रै घड़ै पर मटकी,
ऊपर बिड़लो केल करै। जलजमना·
नणदलड़ी नै भेजूँ मेरो कह्यो येन मानै,
सास नै भेजूँ तो मेरो कुल लरजै।

धमाल- ४४,

रँग भीणूँ रै राठोड़ो थारी फोजन में।
केसरिया कसूमल राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
भगवाँ सोहैं भोले साधन में। रँग...।
कबरख किलँगी राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
काली (लामी) रै जटर भोले साधनकै।
काँधे बन्दूख राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
लगर घोटो भोले साधन कै।
काँनाँ में जग मोती राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
मँदरा सोहै भोले साधन कै।
सवा मण की साँग राजा राठोड़ाँ कै सोहै।
इकतारो करताल भोले साधाँ कै।
कड़्याँ तो कटारो राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
मूँज को आड़नन भोले साधाँ कै।
लखीणी पगरखी राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
काठ की खड़ाऊ भोले साधाँ कै।
ऊँचा ऊँचा म्हैल राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
वँण बिच धूँणूँ भोले साधाँ कै।
खाँडों रै खुड़कतो राजा राठोड़ाँ कै सोहै,
तुलसाँ की माला भोले साधाँ कै।

धमाल- ४५,

म्हानैं हीरियो सो रंग सुहावै।
हीरियो तो सॉवण गोरी हरयो ए भादवो,
हाँ ए म्हारी धरती कै जोबन आवै।
हीरियो सो मणियारीनै रंग सोवै
हाँ ए प्यारी रंग रंग चुड़लो ल्यावै।
हरियो सो रंग राये धीपीडा नै सोवै
हाँ ए प्यारी रंग रंग चुनड़ी नै ल्यावै॥
हरियो हरियो रंग सुरंगी बादलियाँ नै सोवै,
हाँ ए गोरी भर भर पालर ल्यावै॥
हरियो हरियो रंग दे ताँ बाजरियाँ नै सोवै,
हाँ ए गोरी रवड़्यो वो लहरका ल्यावै॥
हरियो सो रंग गरड़ जी नै सौहै,
हाँ अे गोरी आप हरी चढ़ि आवै।
हरियो सो लहरयो म्हारी गोरी धण रै सौहै,
हाँ अे प्यारी बा तो ओढ़ म्हैल में आवै।
हरियो रूमाल सुगणै मारूजी नै सौहै,
हाँ अे प्यारी बो तो बाँध म्हैल में आवै।
हरियल हरियल गोरी बो तो हरयो पेसामठे
हाँ अे बै तो हँस हँस कर बतलावै।
हाँ रे बो तो रँग में रँग मिल ज्यावै।

धमाल- ४६,

कुबज्याळो स्याम डिगर गयो रै।
काजल की कजलोटी लेग्यो, फीके र नैणां कर गयो रै।
हार डोर मेरा सब हड़ लेग्यो,
तुलसाँ की माला म्हाने दे गयो रै।
ओढ़ण की म्हारी साड़ी लेग्यो,
बिरँगा बसतर दे गयो रै।
माँथे री म्हारी बिनली लेग्यो,
सूँने माँथै कर गयो रै।
रँग भरी म्हारी म्हन्दी लेग्यो,
धोळे हथाँ कर गयो रै।

धमाल- ४७,

गोपाल पालणे वो झूलै।
काहे को थारो बण्यो रै पालणूँ,
काहे की लड़ लूमै।
अगड़ चनण को घड़्यो रै पालणूँ,
रेसम की लड़ लूमै।

धमाल- ४८,

[illegible]लादूसिंहजी, पाल: ता. २६-३-४२.

मत मौरे रे मोहन पिचकारी।
कै मण लाल गुलाल उडत है,
हँओ प्यारा कै मण केसर क्यारी।
मर पिचकारी म्हौरे मुखड़ा पर मारी,
हँओ प्यारा काजलियो री रेख बिगाड़ी।
मर पिचकारी मेरी अँगियाँ पेर मारी।
हँओ प्यारा गोटा री आब बिगाड़ी।
मर पिचकारी म्हौरे स्यालूड़ा पर मारी।
हँओ प्यारा घूँगटिया री आब बिगाड़ी।

धमाल- ४९,

कद कँनवो निजर पड़ैलो म्हारी।
कँनवै री खातर मैं तो बाग लगायो,
अेक रै बाग दूजी बाड़ी।
कँनवै की खातर मैं तो कूवो रै खिणायो,
एक रै कूवो दूजी बावड़ी।
कँनवै की खातर मैं तो घुड़लो मुलायो,
एक रै घोड़ो दूजी घोड़ी।
कँनवै री खातर मैं तो चोपड़ रै मुलाई,
अेक रै स्यार दूजी कोड़ी।

धमाल- ५०,

मुख मुरली बजावो ननजी का लाला।
ऐसी रै बजादे जैसी पण-घट सुणिये,
पाँणी की पणिहार मँगन होय ज्या।
ऐसी रै बजादे जैसी बन-खंड सुणिये,
चरतीगऊ (मिरगली) रै मँगन होय ज्या।
ऐसी रै बजादे जैसी बागाँ में सुणिये,
बागाँ माँली कोयली मँगन होय ज्या।
ऐसी रै बजाये जैसी गोकल सुणिये,
गोकल माँली गूजरी मँगन होय ज्या।
ऐसी रै सुणाइये जैसी म्हैलाँ माँय सुण ज्या,
म्हैलाँ बैठी रादका मँगन होय ज्या।

धमाल- ५१,

बोलत ना है राधे गोरी काहे सैं।
लामा लामा केस बण्या रै राधे का,
तेल फुलेल रमाये सैं।
तीखा तीखा नैंण बण्या रै राधे सैं,
काजलिया री रेख रमाये सैं।
धोला धोला दांत बण्या रै राधे का
केल रो दांतणियां कराये सैं।
गोरी गोरी देह बणी रै राधे की,
जल जमना जी के न्हाये सैं।
मूँगफली-सी आँगली बणी रै राधे की,
रचणी म्हन्दी लगाये सैं।

धमाल-५२,

थांने सुमरूँ हे माय भुवानी।
माय भुवानी सदा ये मनमाँनी,
आछो मइया धोलै गढ़ की थे राणी।
कूँण देव थांने पैदा कींनी,
कूँण देव थाँने माँनी।
राम चनर म्हाँने पैदा कीनी,
पाँचूँ पंडवाँ माँनी।
कूँण देव थारै तपै रसोई,
कूँण भरै जल़ पाँणी।
अगन देव म्हारी तपै रै रसोई,
इंद भरै जल़-पाँणी।
सिंघ चढ़ी परबत पर बोली,
धोलै गढ़ की राणी।
हरियो-सो पीपल़ देवा बारय भँवन कै,
लाल धजा फरकाँणी।

धमाल-५३,

बिन कजलै या म्हन्दी बैरण क्यूँ राची।
बिन कजलै या मैंदी बैरण क्यूँ रै उगी।
कठै रै सुवा यूँ थारो गैरो गैरो कजलो,
कठै रै सुवा यूँ बूँटो रचणी को।
नैणाँ रै सुवा यूँ थारो झींणूं २ कजलो,
आँगल़ियाँ सुवा यूँ बूंटो रचणी को।
कॅरै सैं सिंचा यूँ थारो झींणू २ कजलो,
कॅरै सूँ सिंचा यूँ बूंटो रचणी को।
आँसूड़ाँ सिंचा यूँ थारो झींणू २ कजलो।

धमाल- ५४,

धड़को दे मेरा स्याम बाजणती बँगड़ी ओ पिव म्हानैलेदे रै।
पाणीड़ा नै जाऊँ बा तो रिमझिम रिमझिम बाजे ओ
ीयाकूबखाँजी — घड़लो भरूँ तो गजबण गरजै बँगड़ी। म्हानैलेदे...।
नूवाँ. — रसोया में जाऊँ तो बंगड़ी रिमझिम रिमझिम बाजैओ
ता. २६-३-८३ शावे — थाल परूसूँ तो जुलमण गरजै बँगड़ी। पिव लेदे...।
मैलाँ में चढूँ तो बंगड़ी रिमझिम रिमझिम बाजे ओ,
सेजाँ मैं पोढूँ तो बैरण गरजै बंगड़ी। पण मन्नैलेदे...।
बागाँ में जाऊँ तो बंगड़ी रिमझिम२ बाजै ओ,
झूलै में झूलूँ तो बैरण गरजै बंगड़ी। पण म्हानै...।
सेरल्याँ में जाऊँ तो बंगड़ी रिमझिम२ बाजै ओ,
बातड़ली करंता गजबण गरजै बंगड़ी। पण म्हानै..।
फागणियूँ खेलूँ तो बंगड़ी रिमझिम २ बाजै ओ।
घूमरड़ी घालूँ तो जुलमण गरजै बंगड़ी। पण म्हानै..।
पगाँ में पायलड़ी बिछिया रिमझिम२ बाजै ओ,
गोरियल पूँचाँ केल करै या बंगड़ी।
रलवाँ (आँगणिये फिरूँ तो बिछिया रिमझिम२ बाजै
ठिमकै हूँ चालूँ जुलमण लरजै बंगड़ी...।

धमाल - २५।

सब तज के भरथरी राजा जोग लियो।
मैंल मालिया राजा सब तज दीन्या ओ,
मदरी-सी माला बो तो लेय चल्यो।
राज-पाट राजा सब तज दीन्या ओ,
मगवांड़ी चादरड़ी बो तो ओढ़ चल्यो।
कड़र रै गोरखू राजा सब तज दीन्या ओ,
मिरगलिया री छाला बो तो लेय चल्यो।
राणी तो बाँदी राजा सब तज दीनी ओ,

बँण-खँड में धूँणूँ बैं तो जाय घाल्यो।
सोड़ पथरणाँ राजा सब तज दीन्या ओ,
अंग में बभूत रमाय चल्यो। तुलसीदास आस रघुबरकी
हरसैं ध्यान लगाय चल्यो।

धमाल—२६,

पलवट में धजा रो धँणी परगटियो।
कै लख ओंवें थारै कोड़िया म्हाराजा ओ,
कोड़ियाँ रो कलँक झड़ादे रामा पीर।
नो-लख ओंवें म्हारै कोड़िया कलंकी ओ,
कोड़ियाँ रो कलँक झड़वाँवाँ सेवगो।
कै लख ओंवें थारै आँधिया म्हाराजा ओ,
आँधियाँ री लाकड़ी गिरवादे रामा पीर।
नो-लख ओंवें म्हारै आँदिया
आँदियाँ री डाँगड़ी गिरवाँस्याँ सेवगो।
कै लख ओंवें थारै बाँजड़ी म्हाराजा ओ,
बाँजड़ियाँ री गोद भरवादे रामा पीर।

धमाल - ५७,

श्री याकूब खाँ, बेगम में धुन धर रै मनवा।
नूँ से प्राप्त. नाब दवादस है नहीं उन कै,
ता. २७/१२/८३. ना कोई धरणी धर रै।
जाप जपा कुछ है नहीं उण कै,
सुमरण किंण रा कर रै।
बिन धरणी अेक अरठ चलत है,
बिन बादल अेक झड़ रै।
ना बरसै बैठे अमी रै झरब है,
बो अमी रस पीया कर रै।
बिरमा बिसणूँ महेसर तीनूँ,
ये बी आवागुण रै।
जिंण अंछर कै लुब ना मातरा
बो अंछर रट्या कर रै।
व्हाँ पूँच्योड़ा फेर नहीं आया,
जाय रह्या व्हाँ पर रै।
कहत कबीर सुणो रै भाई साधो,
सुँन में धुँन तूँ धर रै।

धमाल - ५८,

छिटकायले ओ केस भँवर काला।
किंण पर पहरयो अे गोरी घमक घागरो,
किंण पर नैंण करया रै काला।
मारू जी पर पहरयो म्हें तो घमक घागरो,
रसिये ऊपर नैंण करया रै काला।

धमाल- ५९,

सैंयाँ मैं मेरी गरज बुलायो।
जेठ मॅास में आयो सायबो,
इंदराजा घर रायो। सैंयाँ मैं...।
सव्ड़ मॅास में आयो सायबो,
हालीड़ाँ यो बीज सँमायो।
साँवण मांस में आयो सायबो,
राधे जी नै हिंडोलो घलायो।
भादू मांस में आयो साँवरो,
धरती कै जोबन छायो।
आसोजाँ में आयो साँवरो,
बेलड़ियाँ फल छायो।

धमाल- ६०,

चरज्यायगो मिरगलो हर बाड़ी।
कूँण थारी बाड़ी की बाड़ तो करैगो,
कूँण करै रखवाली ओ पिया।

लिछमण बाड़ी की बाड़ तो करैगो,
सिया जी करैगी रखवाळी ओ पिया।
कूँण थारी बाड़ी को बाँणच तोड़ै,
कूँण करैगो तरकारी ओ पिया।
लिछमण बाड़ी का फूल तोड़ैगो,
सिया जी करै तरकारी ओ पिया।

धमाल-६१,
तप ना ले ओ मूदर बाल जती।
पीपळ चन्नण रूँख कटाय,
चिता तो चिणा लई
अगन देव में मल मल न्हायो,
ताव न लाग्यो पाव रती।
काये की थारी बणी रै कटारी,
काये की रै लगाई साफी।
सत सुमरण की बणी रै कटारी,
गुरगम की रै लगाई साफी।
गंगा राम बाँमण को रै गावै,
स्यो- मंदर में या किवद कथी।

धमाल-६२,
गोरा हरज्या भरतपर गड बाँको।
तूँ मत जाँणे गड बण्यो रै रेत को,
पूठी तो लगी रै गोरा परवत की।
तूँ मत जाँणे बेटो लड़ै रै जाट को,

कँवर लैड़े रै गोरा जसरथ को ।
बुरज बुरज पर गोरा चोसट जोगणी,
दरवाजे पर लैड़े रै भैरूँ बंको ।
राज गद्दी के लेराँ सतर पीर है,
भीतर की ड्योड्यॉ वो हणमत बंको ।

घमाल- ६३,

झपटे मत चीर असर मेरो ।
किंण राजा की रै कँवर लाडली,
कुंण लागे भाई थारो ।
द्रुपत राजा की मैं कँवर लाडली,
सिरी किसन भाई मेरो ।
कुंण राजा की तूँ लागे असतरी,
कुँण लागे देवर तेरो ।
राजा अरजन की कहूँ मैं असतरी,
भीवं बली देवर मेरो ।
जाय पुकारूँ मै
धड़ सें सीस करे न्यारो ।

धमाल-६४,

नरहड़ को पीर कला रै कलाधारी।
के लाख ओवें थारै बालक बाँजड़ी,
के लाख नार जडूले वाली।
नो-लाख ओवें म्हारै बालक बाँजड़ी,
दस लाख नार जडूले वाली।
के धन मांगें ओ बै बालक बाँजड़ी,
के धन नार जडूले वाली।
पूतर मांगें म्हारै बालक बाँजड़ी,
अन-धन नार जडूले वाली।
कांई रै चढ़ावें थारै बालक बाँजड़ी,
कांई रै चढ़ावें बै जडूले वाली।
लाडू ड़र चढ़ावें म्हारै बालक बाँजड़ी,
रोक रुपैयो जडूले वाली।
पूतर देस्याँ म्हे तो बालक बाँजड़ी,
अन-धन नार जडूले वाली।
ऊँची या दरगा बिलंद दरवाजा,
घुरें सनाय नोपत भारी।

धमाल-६५,

रलकाले ओ सेली वाला मूंग फली।
कठै रै मुवा यूँ थारी मोठ बाजरी,
कठै रै मुवा यूँ थारी मूँग फली।
तालाँ में मुवा यूँ थारी मोठ-बाजरी,
टीबड़्याँ मुवा यूँ थारी मूंगफली।
कांये सैं सिंचाऊँ थारी मोठ-बाजरी,
कांये सैं सिंचाऊँ थारी मूंगफली।
पालीरिये सिंचाऊँ थारी मोठ-बाजरी,
ड़दड़लै सिंचाऊँ थारी मूंगफली।

काँये सैं निंनाणूँ थारी मोठ-बाजरी,
काँये सैं निंनाणूँ ढोला मूगफली।
कसियाँ निंनायूँ थारी मोठ-बाजरी,
खुरपाँ निंनाणूँ ढोला मूंगफली।

धमाल- ६६,

गाँजो पीज्या ओ सदासिव भोला अमली।
कठै रे भवा धूँ थारो भाँग धतूरो,
कठै रे भुवा धूँ लड़ गांजे की।
क्यारयाँ रे भुवा धूँ थारो भाग धतूरो,
धोराँ रे भुवा धूँ लड़ गांजे की।
काँये सैं सिंचा धूँ थारो भांग धतूरो,
काँये सैं सिंचा धूँ लड़ गांजे की।
पाणीड़ै सिंचा धूँ थारो भांग धतूरो
दूदाँ हूँ सिंचा धूँ लड़ गांजे की।

धमाल- ६७,

(बापा) बण आयो रे बैद गिरधारी।
बण के बो बैद सहर में निकल्यो,
देखत डोलै नाड़ी।

म्हैलाँ बैठी बोली रै राध का,
देखो देखो नबज म्हारी।
आंगली पकड़ म्हारो पूंचो रै पकड़यो
हॅंजे राधे सरद गरम दोन्यू भांरी।
अेक दुवाई थांनै अैसी देस्यां,
थारी सरद गरम मिट ज्याई।

धमाल– ६८,

पिया जावो र बांस-बेरली।
बांस बेरली की चुनड़ी ल्याइये,
निरखैंगी संग री सेरली।
बांस बेरली को चुड़लो ल्याइये,
देखैं म्हारी सात सेरली।
बांस बेरली की चूरखड़ी ल्याइये,
निरखैंगी संग री सेरली।
बांस बेरली को घगरो ल्याइये,
पहरैगी घर की नारी।

धमाल– ६९,

रांम्है तज दियो तखत हजारो।
कै मांसां की रांम्है ईंट चपाई,
कै मांसाँ को गारो।
तो मांसाँ की रांम्है ईंट चपाई,

दस मांसाँ को गारो।
सोनां की रांभै ईंट थपाई,
रूपा को यो गारो।
इक टँगियो रै बो म्हैल चिणायो,
रँभ्रूडै ढ़ायो गारो।
धान गई ईंट मंदर धर रायो,
माज्य गयो चेजारो।

धमाल- ७०,

श्री याकूब खां नूवाँ से प्राप्त ता.२८.

ब्रज सूँनी अे सहेल्यो अेक राम बिना।
राम बिना अे अेक काँन बिना।
काँन बिना ब्रज अैसी सूँनी लागै ओ,
डार सूँनी अेक मिरग बिना।
कांन बिना ब्रज अैसी सूँनी लागै ओ,
जाँन सूँनी अेक बीन बिना।
थारी तो बिरज म्हांनै अैसी सूँनी लागै ओ,
रातसूँनी अेक चाँन बिना।
काँन बिनां ब्रज अैसी सूँनी लागै ओ,
पिरजा सूँनी अेक राज बिना।

धमाल - ७१,

देखो रथ में राघोनँद आवत है।
हरियल गोबर आगणियों लिपायो,
मोतियन चोक पुरावत है।
मात जसोदा करत आरतो,
सखियाँ मंगल गावत है।
सात सुहागण लेत वारणाँ,
जसरथ कंठ लगावत है।
"तुलसीदास" आस रघुबर की,
तीन लोक जस गावत है।

धमाल - ७२,

कूँजन में झूलैं रै गिरधारी।
काहे रो थारो घल्यो रै हिंडोलो,
काहे री रै लगाई डोरी।
अगड़ चनण रो घल्यो रै हिण्डोलो,
रेसम की रै बंणी डोरी।
कै मांसाँ रो थारो बण्यो रै हिंडोलो,
कै मांसाँ री बणी रै डोरी।
नो मांसाँ को यो बण्यो रै हिण्डोलो,
दस मांसाँ की लगाई डोरी।
"तुलसीदास" आस रघुबर की,
झोटा दे राधे गोरी।

धमाल- ७३,

सूवा नखल जायगो तूं ही हो।
सासू जी नै कहिये सूवा पगाँ रै लागणी
सुसरै जी नै राम सही ओ।
घर गुजरी रै सूवा बासो रै लेइये,
धाँनै घोलैगी बा दूद दही ओ।
ऊँचे-से बिरछ बसेरो रै करिये,
झपटै ना बाज सही रै।

धमाल- ७४,

रच ज्याई रै चनणियाँ केसर सैं,
म्हारी लगी रै प्रीत परमेसर सैं।
पलक पलक उथलै पनवाड़ी,
मैं मेरै मन में उथलूँ यूँ।
सुरत सबद घर ताळी रै लागी,
सूरत बिलूम्बी म्हारी साधाँ सैं।
बाजीगर यो बाग लगायो,
कळी रै कळी में रस यूँ का यूँ।
भँवर बासनाँ ले फूलाँ की,
हँसलो मँगन भयो सैं।
जळ मांही रै कमोद का बासो,
लग रही डोर (तार) चनरमा सैं।
उगिया भाँन भयो रै उजियालो,
घट में चंदो दरस्यो यूँ।
बाजीगर यो बाजी रचदी

खलक अचूमो देख्यो यूँ।
दोय कर जोड़ माली लिखमू गावै,
खूब धुली म्हाँरै ठाकुर सैं।

धमाल- ७५,

मादोबन सैं किसन कद आवैंगा।
बे माधोबनियें में गवू रे चरावैं,
मखन मलाई रो खावैंगा।
बे माधोबनियाँ में रास रचावैं,
मुखड़ा सैं बैण बजावैंगा।
बै माधोबनियाँ में रंग उडावैं,
राधा जीनै संग ल्यावैंगा।

धमाल- ७६,

गिरवर पर बंसी बाजे।
कूण-सी दिशा में या चिमकै रै बीजली।
कूण-सी दिशा में इदर गाजै।
उगण दिसा में या चिमकै रै बीजली,
उत्तर दिसा इंदर गाजै।
झीणीं र बूँन इनर झड़ लाग्यो,
मदरो रै मदरो गाजै।
रैन अँधेरी चिमकै दामनी,
लरज लरज कर आवै।

"तुलसीदास" आस रघुबर की,
हर चिरणाँ लोय लागै।

धमाल- ७७,

मदरी चालो ओ गुजरियाँ लैंगो गरद भरै।
सिर पर घड़ो रै घैड़ पर मटकी,
ऊपर सुवटो केल करै। हलवाँ चालो..
पगाँ में पायलड़ी थारै ठिमकै र बाजै ओ,
सोनलिया घूगरियाँ झिणकार करै।
सासू थारी बरजै ओ गुजरी,
सुसरो थारो बरजै ओ।
घर रो परण्योड़ो थारो लाज मरै। धीमी चालो
जिठाणी बी बरजै थांनै धोराँणी बी बरजै ओ,
जेठ जी बड़ोड़ो थारो लाजाँ मरै।
सेरल्याँ बी बरजै थांनै नणदूली बीबरजैओ
छोटक्यो निराण्यो देवर ऊबो बरजै।

धमाल- ७८,

पण-घट को यो घाट रसीलै रोक्यो।
कोर की ओट चलै रै मिरगानैणी ओ,
कोर की ओट चलै रै रसियो।
घूँगटिये री ओट चलै या मिरगानैणी ओ।
मूँछड़ल्याँ रै मांण चलै रै रसियो।
यो छुरँगाँ रै मांण चलै रै रसियो।

कान्हे रे लेय चलै मिरगानैणी ओ,
कान्हे रे लेय चलै रे रसियो ।
बिड़लो रे लेय चलै रे मिरगानैणी ओ,
उफूड़ो यी लेय चलै रे रसियो ।
कान्हे चलै मिरगानैणी ओ,
कान्हे चलै रसियो ।
कान्हे रो मोद करै मिरगानैणी ओ,
कान्हे रो मोद करै रसियो ।
मदू जी रो मोद करै मिरगानैणी ओ,
माऊँणी रो मोद करै रसियो ।

धमाल-७८,

घर घर को रे चोर कन्हैयो ।
जैणें जैणें को फलसो झांके,
सँग ले ऊदो भैइयो ।
जैणें जैणें को छींको टोवै,
दद मांखन रो खवैयो ।
बाड़ तोड़ आदी को भागै,
गुजरयाँ रै रथ पिटैयो ।
जैणें जैणें का कानूं ल्यावै रे ओलमा,
असो है नकटैयो ।
मॉखन रै सांटै गुजरयाँ रै आँगण,
घर घर नाँच नचैयो ।
बैठ कदम पर गवू रे चराई,
मोवण मुरली बजैयो ।
घर घर को चोर कन्हैयो ।

धमाल- ८०,

निर्मित:

घर आवो मेरा स्याम उडीकै गोरी।
हिवड़ो कोनी बसको मेरो जिवड़ो कोनी बसको ओ
छाती तो मईयाबेबस मोरी।
ये दोय नैंण म्हेरो कह्यो कोनी मानै ओ,
झूड़ लाग्यो आँखियाँ जोरी।
रात मैं बिताऊँ मेरो दिनड़ो कोनी बीतै ओ,
दिनड़ो बिताऊँ मेरी रात दोरी।
मनड़ो मेरो जाँणै पिव हूँ मिलूँ मैं पलकमें,
थारै हूँ लागी या सुरत डोरी।
सांप्रत न मिलो तो ढोला सुपनाँ में मिलज्यावो ओ,
सूरतड़ी दिखावो थारी मेकर खरी।

धमाल- ८१,

मारू मिलणाँ री लग रही साई।
सुरँगी धरती सुरँगो आबो,
रुद सुरँगी उत आई,
साँवण सुरँगो बरसत आयो,
च्याऊँ कूँट सुरमई।
बीजो परब साँवण रो लाग्यो,
तीज तुरेली आई।
राजा जी री ओलँग गये सायब री
कोलाँ री तिथ ब्याई।
मारू मिलणाँ री लग रही साई।

BITS LIBRARY BITS PILANI (RAJ)

धमाल- ८२,

म्हौरे बरसत सँावण आयो। यो काँईर सागै ल्यायो।
कूँण सँावण थौंने म्हौरे रै खिनायो,
कूँण थौंने मारगियो बतायो।
इन्दराजा थौरे देस खिनायो,
बिजळी रै पळकै आयो।
खरसै नै देसाँ हूँ काढ़्यो,
सतवारा फ़ड़्ल्यायो।
ढ़ेराँ ल्यायो मोठ-बाजरी,
आँगण नीर सवायो।
घर बाहर कोकलिया बोलैं,
सै को रै मन हुळसायो।
म्हौरे मलर सँावण आयो।

धमाल- ८३,

खांडो खुड़क्यो ओ म्हाराणा थारो हळदी घाटी में।

धमाल- ८४,

रुत थारी आगी रै पपैया बैरी बोलणकी।
कूँण-सै म्हैनाँ में बोलै मोर तो पपैया वो,
कूँण सोइ म्हैनाँ में बोलै काली कोयली।
सावण कै म्हैनाँ में बोलै मोर तो पपैया वो,
मज तो भादू में बोलै काली कोयली।
कांई तो चुगै रै थारा मोर पपैया,
काँई तो चुगै रै काली कोय ।
दाल तो चुगै रै म्हारा मोर पपैया वो,
दाखड़ली चुगै रै म्हारी कोय ।
कोई तो पीवै थारा मोर तो पपैया वो,
कांई तो पीवै रै बैरण काली कोयली।
पालरियो पीवै रै म्हारा मोर पपैया वो,
दूदड़लो पीवै रै गजबण काली कोयली।
कैठे तो बसै थारा मोर पपैया वो,
कैठे तो रैवै रै बैरण काली कोयली
बागाँ में बसैं रै म्हारा मोर तो पपैया वो
म्हैलाँ में बसै रै बैरण काली कोयली॥

धमाल- ८५,

थे म्हौनें मोली वो सायबा रँगीला रसिया ।
थारी मीठी बतियाँ रै समाई छतियाँ ।
कालेरो हिरणियूँ जंगल को यो बासी रै,
चर ज्यासी सींव बिराणी वो पिया ।
परेदसाँ जाय बैठ्या पिवजी पतियाँ नांई भेजो वो,
कांई लागै स्याई में थारै टोटो रै पिया ।
क्यों मनैं मोही ओ ।
साँवणियूँ बी गरजै वो पिव जी मादूड़ो बी बरसैवो,
पापी यो पँपैयो रै सतावै ओ पिया ।
रैण दूँदेरी पिवजी चिमकै बीजली ओ,
इंदर झड़ी तो लगावै ओ पिया ।
म्हैल-मालिया पिवजी सूँना म्हानै लागै वो,
सूँनी या सेजड़ली खावा आवै रसिया ।

धमाल- ८६,

नौंढ लिखी ८ धमालें भी — भरदे मोहरो साँवरिया नानी बाई कै ।
और तो सगाँ नैं साँवरा म्हैल मालिया वो,
नरसीलै भगत नैं या फूटी हटड़ी ।
और तो सगाँ नैं साँवरा हींगलू का ढोल्या वो,
नरसीलै भगत नैं या टूटी मचली ।
और तो सगाँ नैं रै साँवरा सोड़-पथरणा वो,
नरसीलै भगत नैं या फाटी गुदड़ी ।
और तो सगाँ नैं साँवरा जिंनवा रा भोजिन वो,
नरसीलै भगत नैं या बासी खिचड़ी ।

धमाल- ८७,

मारू मिल ले ढोल आयो नल़ को।
नल़ राजा में निखो रै पड़्यो थो,
बौं को हुयो रै कोयलो धन को।
नल़ राजा में बिपत पड़ी छी,
जाँ रो ढ्यो रै काँगरो गढ़ को।
नल़ राजा में दुख रै पड्यो थो,
जाँ रो घोड़ो मर्यो रै चढ़ण को।
नल़ राजा में ओड़ी रै पड़ी छी,
भून्यो तीतर उड़ग्यो बन को।
नल़ राजा रो दिन पल़ट्यो छो,
खूँटी हार निगल गई गल़ को।

धमाल- ८८,
बरजे छी ज्याँन की नैं क्यूँ रै ल्यायो।
मैं बरज्यो बरज्यो रै नहीं मान्यो,
महैल लखीणूं फुड़वायो।
मैं रोक्यो रोक्यो नहीं मान्यो,
बाग नोलखो रै उजड़ायो।
मोत कह्यो रै कैंणूं नहीं मान्यो
कूँवर लाडलो मरवायो।
समझायो समझ्यो नहीं मारू जी,
सारो कुड़मो खपवायो।

धमाल-८९,

बीजो सोरठ कै मिस आयो।
बीजै बीजै भेख धरयो रै पिंडत को,
घर घर बेद सुणायो।
बीजै बीजै भेख रै धरयो बाण्यै को,
घर घर तोल लगायो।
बीजै बीजै भेख धरयो बाजीगर को,
घर घर बानर नचायो।
बीजै बीजै भेख रै धरयो नरवै को,
घर घर बाँस रुपायो।

धमाल-९०,

पाँडू करग्या बो राज धरम को।
कैरू पंडवाँ म्हैल चिणायो,
जौरो धर दियो सूत मवन को।
कैरू पंडवाँ बाग लगायो
जैं में कोई रूँख कदम को।
कैरू पँडवाँ चोपड़ मांडी,
जैं में पासो पड़यो रै करम को।
कैरू पंडवाँ झगड़ो रै मांड्यो,
बाँण चल्यो अरजन को।

धमाल-९१,

मरू ढ़ोलो आयो मँगन भई रै।
जद बो ढ़ोलो कांकड़ आयो,
खबर दई रै।

जद बो ढ़ोलो बागाँ आयो,
मालण खबर दई ओ।
जद मेरो ढ़ोलो पण-घट आयो,
पणियारयाँ खबर दई ओ।
जद म्हारो ढ़ोलो सेरैलै पधारयो,
सेरल्याँ खबर दई ओ।
जद म्हारो ढ़ोलो तोरण आयो,
दास्याँ खबर दई ओ।
जद म्हारो ढ़ोलो चँवरी आयो,
जोस्याँ खबर दई ओ।

—धमाल-५२,

सत जुग में रै राज पाँडूड़ा करता।
जे सत जुग में कोड़ी होती,
पाँडूड़ा पाँव कठै धरता।
जे सतजुग में माँखी होती,
पाँडूड़ा भोजिन कठै करता।
जे सतजुग में माँछर होता,
पाँडूड़ा सेज कठै सोता।
जे सत जुग में मावस होती,
पाँडूड़ा हेंवाले में क्यों गलता।

धमाल-५३,
मथरा मत जावो रै कान प्यारा।
इस मथरा रो रै मारिग कठिन है,
बीच रै मवैं नदियाँ नाला।

ई मथरा को राजा रै बुरो है
पकड़ मँगावै बंसी वो वाळा।
इण मथरा की काना मसत गूजरी,

धमाल-६४,

नीचे लिखी धमालें श्री … गिरं शोभावत … मिली. …३१।३.

राणी रुकमण नै ब्यावण हर आया।
छपन कोड़ जादू चढ़ आया रै,
आया बलेदव जी हळ धारी।
वैरू बी आया पाँडू बी आया,
आयो र भींव गदाधारी।
गणपत ओर पारबती बी आई,
आयो आयो अमली ~~बळद~~ जटाधारी।
तेतीस कोड़ देई-देवता बी आया रै,
हरी किसन की हसवारी।
नारद सारद मुनीगण आया रै
आया रै सेस जी मिणधारी।
बिरमा बी आया बिसणू बी आया,
होप गरड़ की हसवारी।
"तुळसीदास" भजो रै भगवाना,
चिरण कँवळ पर बलिहारी।

धमाल-६५,

सूती जागो अे सुंदर गोरी पिव आयो।
आदी आदी रात परर को तड़को अे,

मारू जी रो करवातियो गाजत आयो।
जगमग चाँद गोरी तारा झबक्या मारे ये,
डूँदा चोर ; रातड़ली चाँनणियूँ छायो।
पोळी बड़ताँ जागो अे गोरी, आँगण बड़ताँ जागो अे
पैड़ी र मैलाँ सेल खुड़कायो।

धमाल-९६,

गैरो तपियो थो जैसिंघ हिंदवाँणी।
नारणसेज जैसिंघ राजा अेक जैपुरियो बसायो,
चाँदपुर का चाँद पोळ की सैंनाणी।
जैसिंघ राजा अेक बाग तो लगायो,
कदम रूँख की सैंनाणी.
जैसिंघ राजा अेक नहर तो खिंणाई,
घर घर में करियो पाँणी।
जैसिंघ जोर दियो बदस्या नै,
मैलाँ में काँपी बाँ की डुरमाणी।
जैसिंघ राजा तुरकाँ नै रै मारया,
रुळती फिरी रै बाँ की तुरकाँणी।
जैसिंघ पाळना करी रै हिंदवाँ की,
सुख पाई रै जाँ री हिंदवाणी।
जैसिंघ पाळना करी रै पिरजा की
अन-धन लिछमी घणी रै माणी।

धमाल-९७,

नारणसेज बूडा मजले उमर रही थोड़ी।
बूडो होय बंदा लेले रै सुमरणी
गाय भैंस तज घोड़ी

बूड़ा भजले अमर ल्यायो थोड़ी।
धन दौलत थारी पड़ी रैहैगी,
संग जाय नहीं कोड़ी।
बेटा पोता थारा दूर रैहैंगा,
बिछड़ जायगी जोड़ी।
जमका दूत फिरैं चोगड़दै,
जद बीतैगी ओड़ी।
लख चोरासी बूड़ा फिरसीं भटकतो,
जूँण मिलैगी या मोड़ी।

धमाल-५८

नारायणसिंग मुरगा टुक टुक बोल सुँवारो।
चन्दपुरा. मुरगो रै बोल्यो सूँझी साँझ को,
लाग्यो नीम-सो खारो।
बैरी मतना तूँ बोल सुँवारो।
मुरगो रै बोल्यो सोपो पड़ताँ,

मुरगो रै बोल्यो आदी रात को,
लाग्यो रै मैर सो खारो।
मुरगो रै बोल्यो ढ़ळती रात को,
लाग्यो रै पीव हूँ प्यारो।

धमाल-५९

बाला जुग में अमर नहीं कोई।
जो जो आया बाला नै सब जाँगा,
थिर ना रैहेगो कोई।

देव बी जाँगाँ रै बाला दांनां बी जांगां,
जाँगाँ मिनख पसूई।
डूँगरिया बी जाँगाँ रै बाला समदरिया बी जाँगाँ,
ऊँचा नींचा (हरिया सूका) रूंख पंखोई।
चनरमा बी जागो रै बाला सूरज बी जागो,
तारा बी जाँगाँ लख-नोई।
धरती बी जागी बाला अमूरियो बी जागो,
पूँन तेज सब कोई।
सुँन बी जागी बाला धुन बी जागी,
धरम पाप सबकोई।
अब रैहेगो बाला धंणी रै रेड़ को,
ओर रैहै ना कोई।

धमाल-१००

माँखी ये बैरण गजब गुदार्यो।
उड़ मांखी मेरै बिड़लै पर बैठी,
बिड़लै रो माँन बिगाड़्यो।
उड़ मांखी मेरै घूँगटिये पर बैठी,
स्यालूड़ा रो माँन बिगाड़्यो।
उड़ मांखी मेरै नैणां पर बैठी,
कजला रो मॉन बिगाड़्यो।
उड़ मांखी मेरी छतिया पर बैठी,
अंगिया रो मांन बिगाड़्यो।
उड़ मांखी मेरी लाँवण पर बैठी,
घगरा रो मांन बिगाड़्यो।
माँखया ये बैरण गजब गुदार्यो।

धमाल-१०१,

निर्मित उड़ उड़ रे काग कजलिया।

पिव पिव सबद बसै रे जिब्या पर,
सुरत पिया री म्हारी अँखियाँ।
पिव की लोय लगी रै हिरदै में,
रूँग रूँग में बँसिया।
जीवूँ तो मैं जलूँ रै बिरै में
मो-मो जलस्यूँ मरियाँ।
ये दोन्यूँ नाँका अँणी रै सेल की,
तीजी नाँय जुगतियाँ।
तीजोड़ी जुगत कागा थारै रै हाथ है,

चतराम ॐB
४।४।६२

धमाल-१०२,

सुपनाँ में स्याम मिल्यो ये म्हौनै।

5-5-43

धमाल- १०३,

श्री प्रभुसिंह नेकी ले नर पिसतावैगो ।
आलमपुरा. घरबारी को रै बणैगो झटड़ो ।
ना-मण मार लदावैगो ।
घर तेली कै बंदर बणैगो डाँगरो,
आँखियाँ पटी रै बँधावैगो ।
मांग मांणजी नें न्यूतो देगो,
साळी न्यूत जिमावैगो,
साळा देख कँवळ ज्यूँ बिकसै,
मायाँ हूँ बैर बिसावैगो ।
तुळसी रै पाड़ कुरड़ पर फींकै,
घर में भाँग लगावैगो ।
घर चमार कै गजू तो बँधैगी,
बामण रेवड़ बिसावैगो ।

धमाल- १०४,

सिया राम चनर बर पायो,
कुँण सीता थारी करी रै सगाई,
कुँण थारो ब्याव रचायो ।
घर कै जोसी म्हारी करी रै सगाई,
पंडताँ ब्याव रचायो ।

काहे को थारो थाम रुपायो,
काहे सैं मंडप छायो ।
अगड़ चनण को थाम रुपायो,
फुलड़ाँ मांडो छायो ।

धमाल– १०५

शिव के मन भाय रही रे कासी ।
कितणी कासी में बाँमण रे बाणियाँ,
कितणी में संडासी ।
आदी कासी में बामण बाणियाँ,
आदी में संडासी ।
कै लख कहिये बामण बणियाँ,
कै लख कहिये संडासी ।
नो-लख कहिये बामण बाणियाँ,
दस लख कहिये रै संडासी ।
कोई करैगा पार बामण बाणियाँ,
कोई रे करैगा सँडासी ।
धरम करै छैं बे बामण बाणियाँ,
भजन कोई रे करैगा संडासी ।

धमाल– १०६

3/4/43. कैसैं छोडी रे जाट बिरज धरती ।
गउ की कूट कुवो पण-घट को,
नो-सै नोसैं नार नीर भरती ।

ऊंडी ऊंडी जाजिम ढलती,
गोडी सैं गोडी अड़ी रैती।
क्यूं थारो मरग्यो बलद डांगरो,
क्यूं थारी धरती कमनिपजी।
ना म्हारो मरियो बलद डांगरो,
ना म्हारी धरती कम निपजी।
बिरज छोड कानूं गयो रे द्वारका,
इस कारण छोड़ी धरती।

धमाल – १०७,

कद आसी ऐ भोजाई राणू काछिवियो।
करो

धमाल-१०८,

म्हारे पीये ने पिछाँण मैं तो लाखन में।
क्रोर पर चढ़त थारो पिव अलबलियो,
कांई कांई राखै हाथन में।
लीलो-सो घोड़ो जीन बनाती,
भालो भलकत हाथन में।
कांई कांई बांधे थारो पिव अलबलियो,
कांई कांई राखै साथन में।
केसरिया कसूमल पिव जी पगड़ी बो बांधै,
बोतल प्यालो साथन में।

धमाल-१०९,

म्हारे पीये के देस बरसो ए बदली।
साउ मास इंदर घर

७/४/८३.

धमाल- ११०,

मत पीवै मेरा स्याम तमाखू नै। मत पीवै वो।
रुप बी जाले या तो हिवड़ा बी जाले वो,
जाले जाले दंत बतीसूं ओ पिया रे मत पीवै वो
जे तूं पीवैगो रे बालिम जरद तमाखू ओ,
तो बण के मिरगलो मैं भग ज्याऊंगी। रे मैं तो भाग ज्याऊंगी। रे मत पीवै वो।
बण के मिरगली अे गोरी तूं भग ज्यागी अे
बण के मिरगली अे गोरी जे भग ज्यागी अे
तो बण के सिकारी थांनै पकड़ ल्याऊंगो अे।
मैं तो पीवूंगो। मैं तो पीवूंगो अे नार तमाखू नै।
जे तूं पीवैगो ओ बालिम जरद तमाखू वो
बण के बमी में नागण घुस ज्याऊंगी रे मैं तो बड़ ज्याऊंगी।
मतना पीवै वो। जे तूं बमी में अे गोरी नागण होय बड़ ज्यागी अे। तो बण के सपेरा मैं पकड़ ल्याऊंगा अे
मैं तो पीवूंगो। जे तूं पीवैगो ओ बालिम सैंण तमाखू ओ तो बण के चिड़कली मैं तो उड़ ज्याऊंगी
रे मैं तो उड़ ज्याऊंगी। मतना पीवै वो।
जे तूं उड़ ज्यागी अे गोरी बण के चिड़कली अे
तो बण के मैं बाज ऊपर ल्याऊंगो रे मैं ऊपर ल्याऊंगो अे मैं तो पीवूंगो।

धमाल- १११,

दारु छोड़ दे भंवर थारी चाकर रैस्यूं जी।
दारुड़ी को दागो म्हारै पोमचिये पर लाग्योजी
पोमचिया रो मांन (भांग) बिगाड्यो ओ पिया रे दारु छोड़ दे
दारुड़ी को दागो म्हारै पटियां ऊपर लाग्यो जी।
तो पटियां रो भांग बिगाड़्यो ओ पिया रे दारु छोड़ दे

दारूड़ी को दागो मेरे नैणाँ ऊपर लाग्यो जी
तो कजला रो माँन बिगाड़्यो ओ पिया रे
दारू छोड़दे। दारूड़ी को दागो मेरी नथली ऊपर
लाग्यो जी तो मोतियाँ री आब बिगाड़ी जी पिया ओ
दारू छोड़दे। दारूड़ी को दागो म्हारे अंगिया ऊपर
लाग्यो जी टूकियाँ रो माँन बिगाड़्यो ओ पिया रे
दारू छोड़दे। दारूड़ी को दागो म्हारे बाजूबन पर लाग्यो
जी तो लूमाँ रो माँन बिगाड़्यो ओ पिया रे दारू छोड़दे
दारूड़ी रो दागो म्हारे कपड़ाँ ऊपर लाग्यो जी, तोटा
री आब बिगाड़ी ओ पिया रे दारू छोड़दे।
दारूड़ी को दागो म्हारे करमाँ ऊपर लाग्यो जी
तो कुल में म्हारो जलम बिगाड़्यो ओ पिया रे
दारू छोड़दे।

धमाल-११२,

जिव तरसै मैं कायूँ बणाऊँ रै पिया जिव तरसै।
न्हाय धोय मैं करी तो रसोई किण नै थाल जिमाऊँ ओ
पिया रै हिवड़ो उमलै।
सोनां रो दिवलो तो रेसम बाती
तो किंए रै म्हैल जगाऊँ ओ पिया।
घूम घागरो लाखी चूनड़ किंए नै ओढ़ दिखाऊँ ओ पिया
सुरंग बेसर म्हारै नोसर हारो यो
तो किंण नै पट्टर दिखाऊँ ओ पिया।
रिमझिम बिछिया म्हारै रँग पायलड़ी
किंए नै बजाय सुणावूँ ओ पिया।
पट्टर ओढ़ कर म्हैलाँ जाऊँ तो,
किंए नै रूप दिखाऊँ ओ पिया।
पिलँग बिछाऊँ मैड़ी पोढ़ूँ तो,
किंए नै हंस बतलावूँ ओ पिया।

११/४/४३.

धमाल-२२३,

छोड़ो चाकरड़ी मद छोकया म्हारो कैंणूं मानो जी।
पूरब री चाकरड़ी ढ़ोला कालजिये में खटकै ओ
दूर री नोकरड़ी म्हौरे कालजिये में करकै ओ,
जोड़ी रे जलाल रो बिछोवो सैंणूं ओ।
ओरवीं चाकरड़ी बिलाला ढ़ोला मानो कैंणूं ओ।
छै म्हैनाँ में आवो ढ़ोला छै म्हैनाँ में जावो
जी तो पूरी बारा साल पुरब रो बासो जी।
जलज्यो चाकरड़ी पाड़ोसी कै बो नाँय सुराबै जी।
न्हे तो कईजाँ अे गोरी रजपूताँ रा बेटा अे,
राजा जी री नोकरी में म्हाँने लैंणूं अे।
करस्याँ चाकरड़ी म्हारी मिरगानैन मानो कैंणूं अे।
चाकरड़ी करो तो ढ़ोला पाँच कोस की करियो जी
भर मादू की रातड़ली मैड़याँ पर रैणूं जी।

धमाल-२२४,

प्यारा लागो जी आलीजा • थाँनै कोठे राखूँ जी
अेक मन जांणै थाँनै नोलख हीरो करके जी
रखड़ी में पुवाय थाँने सिर पर राखूँ जी।
मेरो मन जांणै थाँनै उगतो सूरज करके जी
बिनली बीच चिपाय के माथे पर राखूँ जी।
अेक मन जांणै थाँनै अबीज मोती करकेजी
नक-बेसर री गूँज में पिरोय राखूँ जी।
अेक मन जांणै थाँनै सोनल पोटियो करकेजी,
बाजूड़ा री लूम में लगाय राखूँ जी।
अेक मन जांणै थाँनै राती चिरमी करके जी,
चूड़लिया री चूंप में चिपाय राखूँ जी।

धमाल- ११५,

मन भाया मेरा स्याम थारा भँवर पटा।
काहे रो तेल कढ़ावूँ रँग रसिया, तो,
काहे रे सिंचाऊँ थारा भँवर पटा।
चँपला रो तेल कढ़ावूँ रँग रसिया,
तो तेल सूँ सिंचाऊँ थारा भँवर पटा।
काहे हूँ धुप वावूँ थारा काला२ केसड़ा,
तो काहे हूँ धुवावूं थारा भँवर पटा।
दही हूँ धुप वावूं थारा काला २ केसड़ा,
कांगसिये धुवावूँ थारा भँवर पटा।

धमाल- ११६,

जैपर जावो हो बिलाला म्हारी टीकी ल्यावोजी।
करवलियो पिलाणो थारी करवली पिलाणो जी,
लिलड़ी पर जीन थे मंडावो जी। टीकी ल्यावोजी।
जैपोरया में टीकी अे गोरी मूँगे मोलाँ आवे अे
टीकी२ रिपियां सवायो लागै अे।
चाये लागो रिपियो ढ़ोला चाहे लागो म्होर जी
रँग भरी बिनली थाँनै ल्यायर सरसी जी।
टोडियो नै बेचो ढ़ोला टोडती नै बेचोजी,
घर रै बोहरै हूँ थे उधार ल्यावो जी।
टीकी नहीं ल्याया ढ़ोला अन पाणी नहीं खाऊँ
जी, टीकी केरा चाव हूँ मैं मर ज्यावूँ जी।

धमाल- ११७,

थांनै सैना मैं समझाऊँ।
कानाँ म्हारो बगड़ बताऊँ।

१२|४|४३.

घर आवो थांने गैल बताऊँ।
पोली अजड़ रखाऊँ। थांने सैनां में...।
मक्खन भर कर धरूँ रै कटोरो,
मिसरी मांय मिलाऊँ। थांने...।
सगम नणद नै साल में सुवावूँ,
परणे नै मैड़ी रै चढ़ाऊँ।
दाय पड़ तो आवो लाल जी,
रूँज मक्खन खुवावूँ।

धमाल-११८,

कांनाँ यो कांई लखण तिहारो।
बड़े घराँ थे जाया उपन्या
छोडो काम तिरारो।
घर घर लाला थे तो फिरो भटकतो
जुग में चोर कहावो।
ओछी जात करै गुजरी की,
नैं का जूतर खावो। कांनां...।
कूँण कांनाँ थारी करैगो सगाई,
किंण घर ब्यांवण जावो।
जुग में कांनाँ थे तो फिरो कुँवारा,
नन जी रो नाँव कढ़ावो।

धमाल-११९,
सीता रै सत राव दिखायो।
परण कुटी में सीता सूती,
रावण अलख जगायो। सीता रै...।

बिछ्या घालण उठी रे ज्यानकी,
मर गाँफी उड ध्यायो।
चड़ आबे लंका में पूँच्यो
बागाँ डेरो लगायो। सत राव...।
सीता जी ने धरी कैद में,
करड़ो पहरो बैठायो।
पाव लूँण र सेर मोठ रो अद पीस्यो
आटो खायो। रावण त्राछ दई
सीता कूँ नीचो सीस झुकायो।
बारा बरस भुगती या बिपता,
अंत राम जी आयो। सीता सतराव

धमाल-१२०,

रामा कूमकरण चढ़ि आयो।
धरती धूजी अम्बर हल्यो,
परबत सो गरणायो। रामा...।
खेह चढ़ी ऊंची असमाना,
आँधी ज्यूँ सरणायो।
घोड़ा गटकै हाथी पटकै,
रण में रोल मचायो।
जाड़ दाँत बिच बानर भालू
होठ अंगद लटकायो। रामा कुमकरण...।
धाँणे हणमत बांवें लिछमण
राम पीठ पर आयो,
सगला मिल कर मारण लाग्या,
पण बस में नहीं आयो।
के धोखा मरबौ जीबैं का,
इकलै करक कंपायो।
मो धन र जलमी जायो।

१३।४।७३.

धमाल-१२१,

लिछमण तेरी काची रै कलाई।
गोरो गोरो बदन उमर तेरी छोटी,
मुख मूँछाँ नहीं आई।
सीस जडूलो दाँत दूदिया,
पोतड़ियो रै लिपटाई। लिछमण...।
टाबर देख दया मोय आवै,
मोत घेर तोय ल्याई।
सासरिये तेरी भैनड़ रोवै,
घर रोवैगी तेरी माई।
के जांणे तूं बात जंग की,
मुड़ मुड़ पाछो जाई।
मैं बेटो रांवण बंके को,
इन्दर जीत कहाई।

धमाल-१२२,

बणियाँ रै थारी बुरी कमाई।
धूँण बिसाय घड़ी को बेचै,
डाँडी में चतराई।
घसिया-सा बाट हाट में राखै,
पलड़ा हलका भारी।
बाँण्या थारी चोर कमाई।
लेताँ झुकतो देताँ उठतो
अलिया मौपू मिलाई।
भरे बजाँरा लूट मचावै,
पा थारी साहूकारी।
बोदी दुनियाँ को गल काटै,
घट में दया न आई।

राम रूचेड़याँ बाँव चूकसी,
सिर पर देखै सांई।

धमाल-१२३,

बिजली अे मत पलको मारै।
मैं मेरो जीव लियाँ सूती हूँ।
दुख में अे दुख मत उगेरै।
पिव मेरो छोड़ गयो परदेसाँ,
सूनी देख सतावै।
तूँ बिजली अे मेरी भाँण धरम की,
मत मेरो खिवड़ो जोरे।
आवो थारे बस में अे बिजली,
पिरवा बस में थारे।
ईंण दोन्या नै दूराँ लेज्या,
इतणूँ थारे सारै।

धमाल-१२४,

ढ़ोला नवलो म्हांनै नगर बसावो।
ई राजा कै ढ़ोला त्यार घणेरो
बो म्हांनै नाँय सुहायो।
ढ़ोलर नवलो-सो नगर बसावो।
इंण हटवै कै ढ़ोलर त्यारो घणेरो,
बो म्हांनै नाँय सुहायो।
मारू नवली-सी हाट खुलावो।
ईंण माली कै मारू त्यार घणेरो,
बो म्हांनै नाँय सुहायो।

मारू नवलो-सो बाग लगावो।
ईण कुवैटे पर मारू भीड़ घणेरी,
म्हारो सेरो येन आयो।
मारू नवलो-सो कूवो खिणावो।

-।४।४३.

धमाल-१२५,

सुवटा रे बाला रँग सुरँगो।
कित हूँ ल्यायो सूवा हरी २ पांखिया,
कित हूँ रे रँग-सुरँगो।
किंण दीनी रे थांने तीखी २ चाँचड़ी,
ऊपर रँग सुरँगो।
दरगा हूँ ल्यायो मैं तो हरी२ पांखिया,
सागे रँग सुरँगो।
आप ठाकुर दीनी तीखी २ चांचड़ी,
ऊपर रँग-सुरँगो।
कूँण दीनी रे थांने गोल मटोल आँखड़ी।
पाणीपल रँग-सुरँगो।
सीता मात दीनी म्हाने गोलमटोल
आँखड़ी। पाणीपल रँग-सुरँग।

धमाल-१२६,

थारे मन की बात बतावो रसिया।
आँगणिये आवो तो ढोला टेढ़ा मेढ़ा चालोजी
नैंणाँ हूँ नैंण ना मिलावो रसिया।
रसोयाँ में आवो ढोला घूँट घालकी बैठोजी
बैठी रूँ गोडे के म्हारे ना बतलावो जी।

म्हैलाँ में आवो तो ढ़ोला पूठ फेरकी पोढ़ोजी
भीतरला री बाताँ हँस र नौय सुणावोजी
काँई तो करीजै ढ़ोला म्हारै में ओगणियाँ जी।
इँण तो बाता रो म्हाँनै भेद बतावो जी।

धमाल-१२७,

घड़ ल्यादे (रै) रांगे खाती का चनण चोकी।
दो आँगल का पाया रै खाती
नो आँगल की फाटकड़ी।
तो सो आँगल को घेर निचतो घड़ ल्यादे।
चाँदी केरी पतरी रै खाती,
सोनाँ केरा कोका रै।
हीरा रै पनाँ में चोकी जड़ ल्यादे।
इसड़ी तो चोकी रै खाती राम रसोयाँ सोरै,
जीमै म्हारो सायबो तूँ बेगो ल्याय दे।

धमाल-१२८,

म्हारे आगणियाँ में बाग लगादे रसिया।
इँण तो बागाँ में ढ़ोला आमड़ा मवादे ओ,
निमवाँ की बाड़ उगादे रसिया।
इँण तो बागाँ में ढ़ोला केल मुवादे ओ,
तो चँपला री बाड़ उगादे रसिया।
इँण तो बागाँ में ढ़ोला दाड़िम मुवादे ओ,
तो दाखड़लाँ री बाड़ उगादे रसिया।

इँण तो बागाँ में ढ़ोला बावड़ी खिणवादे ओ,
तो ढ़ोलो मारूणी दोन्यू न्हावाँ रसिया।
इँण तो बागाँ में ढ़ोला हीण्डो घलवादे ओ,
तो ढ़ोलो मारूणी सागै हींडा रसिया।

धमाल-१२९

2/8/83. चंदा तूँ मेरो बाप धरम को।
परणी ही मैं तो पीलै रै पोतड़ाँ,
जुग गयो बारा रै बरस को।
नाँव सुण्यो मैं तो सुरत न देखी,
अड़ियो रै पान करम को।
जिवड़ो मेरो तरसै रै आँखियाँ बरसै,
आवे म्हौने हरख बलम को।
थे ऊँचो चंदा च्यार कूँट में,
जाँणो भेद मरम को।
पीव मिल्याँ म्हारी पाती दीज्यो,

धमाल-१३०,

म्हौने लाडूड़ो यो स्याम सुवाद लागै जी।
यो मीठो लाडूड़ो।
खीचड़ी बी खाई म्हे तो राबड़ी बी खाई ओ,
लाडूड़े सरीखो ना सुवाद आवे ओ।
दलियो बी खायो म्हे तो घाठो बी पिण खायो ओ,
लाडूड़े सरीखो ना सुवाद आयो जी।
बाजरियो बी खायो म्हे तो लापसी बी खाई ओ,
लाडूड़े सरीखो ना सुवाद आयो जी।

क्न्हे रो बण्यो यो लाडू कूंण करी चतराईजी
साची बूजाँ ढ़ोला म्हांनै पतो बतावो जी।
खाती को घड़े तो ढ़ोला खातोड़्याँ में ढूंडा जी,
सोनी को घड़े तो बाँ नै घरां बुलावाँ जी।
घड़ २ लाडूड़ा में सामी साल भरावूं जी,
कोठलियो बी भरल्यूँ ढ़ोला,
ओबीरियो बी भरल्यूं जी
तो आगणियाँ में डूंगो सो मैं खास भराऊँ जी।
दिन उगतै बी खाऊँ ढ़ोला दोपारां बी खावूं जी,
तो ढ़ळती साजड़ली में सेजाँ में खावूँ जी।

धमाल- १३१,

चिरमी ऐ थाँनै बाँवूं मेरै आगण में।
म्हे येतो चिरमी थाँनै बाळूड़ी में बावूं ऐ,
म्हे येतो बावूं चिरमी रोपण में।
म्हे येतो चिरमी थाँनै इद धर्यां सिंचवावूं ऐ।
म्हे तो सिचाऊ थाँनै माखण में।
म्हे येतो चिरमी थाँनै कन्नै बैठ रुखाळूं ऐ,
पलक ना मारुं दिन रातन में।
पानयाँ पाछै चूँटूं ऐ चिरमी सोवन डाबी घालूं
ऐ, डाबी नै छिपाऊं म्हारी अंगियन में।
रखड़ी में पुवाऊँ थाँनै नथली में पुवाऊं ऐ,
हार री पुवाऊं नोवं लड़ियन में।
बाजूड़ा री लूमाँ ऐ नथली, चूड़लिया री झूमा ऐ
लाडणाँ री रावँ थाँनै लटकण में।

धमाल-१३२,

फोगलियो यो भावे मेरी सासड़ ने।
आदी के उठावे म्हाँसूँ पीसीणियूँ पिसवावैजी,
सवा पहर के तड़के सासड़ दही बिलोवे जी।
झाँझरली कै सासड़ मेरी बलदाँ ने नीरवावैजी,
तो मूँ रेदेरैं सासड़ मेरी बगड़ भरावे जी।
सूरज की उगाली पैलाँ पाणीड़ो मँगवावे जी।
(सूरज) किरण्या सागे सासड़ली रोटी में भेजैजी।
पतलो२ चूँटूँ सासड़ पीवरिये नै भांडे जी,
मोटो२ चूँटूँ तो घिटाल बतावे जी।
चूँटण नी जाऊँ तो सासड़ रलया शुक्या मारैजी,

धमाल-१३३,

मत जावो हो पीव परदेसाँ ।
परदेसाँ में ढोला साथीड़ा नहीं छै,
किण सँग थे खेलोला ।
परदेसाँ में मारू जी घुड़लो नहीं छै,
किण पर चढ़ फेरोला । मत जावो परदेसाँ ढोला
परदेसाँ में ढोला बाग नहीं छै,
कठै थे सैल करोला ।
परदेसाँ में ढोला होद नहीं छै
कित पे न्हाण करोला ।
परदेसाँ में ढोला मारूणी नहीं छै ।
किण सूँ हँस बोलोला ।

BITS LIBRARY
BITS
PILANI (RAJ)

१४।४३.

धमाल-२३४,

लारो छोडो मेरा स्याम थारी चाकर रैस्यूँ जी।
पाणीड़ा नै जाऊँ ढोलो लेरा लाग्यो आवै जी,
पणघट केरी पाल पर कॉंकरड़ी मारे जी।
आँगणियाँ में ऊलमालू केरो २ देखै जी
रसोई में बड़ताँ बो काकरड़ी मारै जी।
दूदड़लो दूवताँ ढोलो काडो २ देखै जी,
बाछड़ियो पकड़ताँ बोतो मारै कॉंकरड़ी।
चोकी नै ढालता ढोलो ।० तिरछो २ देखै जी,
सोवन थाल परुसताँ बो मारै कांकरड़ी।
पैड़ियां चढ़ता ढोलो कैरो २ देखै जी,
म्हैल में बड़ता बो तो मारै कॉंकरड़ी।

धमाल-१३५,

रोवै मतना कुम्हार गधो पाय ज्यासी।
रोवै मतना।
यो तो लद्यो लदायो घर आय जासी। रोवै मतना...।
बोरियो बी लेग्यो मेरा खाट गुदड़िया लेग्यो जी,
ऊपर चढ़्यो जजमान मेरो छोरो लेग्यो रै। रोवै...
बोरियो बी ल्यासी थारा खाट गुदड़िया ल्यासी,
ऊपर चढ़्यो कुम्हार थारो छोरो ल्यासी रै।
घर जाऊँ जजमान मन्नै मारै रै कुम्हारी,
तो न्हयाई में बाड़ की मेरा कान खींचै रै।
सिर पर तो मेरै चाक धरदे पचवाड़ै में बाड़ै जी,
मँगराँ में लठोरी मारै खड़्यो नचावैजी।

धमाल-१३६,

सत राख सायब मिल ज्यासी।
सत राख्यो काशी रे राजा हरचँद,
आय मिल्यो अबनासी।
राज दियो अर कँवर जिवायो,
रही जगत स्याबासी।
सत राख्यो सीता सतवंती,
झेल बिपत की ग्यासी।
रावण मरयो रे राम फिर पायो,
ओजूँ म्हैलाँ रै बासी।
सत राख्यो बाँ पाँचूँ पंडवा,
बारा रै बरस बनवासी।
कैरू मार राज बाँ पायो,
आप बण्या हर साथी।
नेम निभाणा रै धरम निभाणा,
जगाँ रै जगाँ सब रैसी,
सत रो बाँध्यो हर आय मिलैगो,
सत छोड्याँ रै पत जासी।

धमाल-१३७,

थे कँई मोया अे कोयलिया म्हारे सायब नै।
साँज सवेरी ढोलो बागाँ घूमण जावै अे,
मोवन बैंण सुणावै तूँ म्हारे सायब नै।
आँमूड़ो कटवाऊँ थारो हरियो बाग जलाऊँ अे
मार निसासो थारो हरियो बाग सुकाऊँ अे।
जिवड़ा रै जलतै साँसा खड़ी जलाऊँ अे।
साँज सवेरी ढोलो सरवर न्हावण जावै अे।
सरवरिया री पाल पर तूँ सबद सुणावै अे।

मार निसासो भरियो सखरियो सुकाऊँ ऐ,
जलतोड़े हिवड़े के साँसाँ तोय जलाऊँ ऐ।
साँज सवेरी ढ़ोलो बण में सैलाँ जोवे ऐ।
मदरा बोल सुणावै तूँ मेरा सायब नै ऐ।
मार निसासो थारै बण में लाय लगाऊँ ऐ।
तो जलतोड़ा जिवड़ा रै साँसाँ तोय जलाऊँ ऐ।
मतना पापण कोयली तूँ पाप कमावै ऐ
मतना तूँ मोय परोपे सायब नै ऐ।

७/४/४३.

धमाल-१३८,

मेरै मन भाया ओ सांरना साचा मोतीड़ा।
करवीलियो पिलांणो ढ़ोला रतनागर नै जावोजी
रतनागर हूँ ल्यावो मॉणक मोतीड़ा।
छाटी भर की ल्यावो ढ़ोला गूँण भर की ल्यावोजी,
तो लीपेड़े आँगणियें ढ़ालो मोतीड़ा।

सूवा मण साचा मोती सासू जी न देस्यूंजी
तो सासू जी री आँगणियें पग-चंपी करस्यूँ
जी। हेली भर मोतिड़ा म्हे जिठाणी नै देस्याँ जी।
तो जिठाणी री लुल-२ पग दाबी करस्याँ जी।
इसड़ी पग-चंपी ढोला कदे न कोई दीनी जी।
इण मोत्याँ रै कारणै जुग उजली होस्याँ जी।
धोरांणी जिठाणी दूँ म्हें चढ़ती रैस्याँ जी।।

धमाल-१३५

हद करग्यो मतीरो यो तो छापर को।
मूरै मूरै धोरां को यो बाँमणियो मतीरो रै
कालै जोगी बीजां को यो बालर को।

भूरे भूरे धोराँ को यो लालगिरी मतीरो रै,
खुल्योड़ो मतीरो यो तो कालर को।
खोपरन्सी खपरी को यो बांमणियों मतीरो रै,
करैड़े कांपे को या तो कालर को।
रवादार गिरी को यो तो बांमणियों मतीरो रै,
टाँकू भर गिरी को यो तो कालर को।
खांड को भरेयोड़ो यो तो धोराँ को मतीरो रै
मिसरी को भरयोड़ो। यो तो कालर को।
कूँण जीमैलो यो तो ~~कालर~~ धोरां को मतीरो रै,
कूँण जीमैलो यो तो कालर को।
माऊजी जीमैगी यो तो धोराँ को मतीरो रै,
माऊजी जीमैंगाँ यो तो कालर को।

धमाल-२४०,

निर्मित म्हाँनै भेजो म्हारा बाबल पढ़बा नै।
संग रा साथीड़ा म्हारा चटसाला में जोवे जी,
म्हानै तो भेजो थे गोबर चुगबा नै।
म्हाँने भेजो म्हारी मायड़ पढ़बा नै।
संग रा साथीड़ा म्हारा कमरा में बैठै जी,
मैं बैठूँ गंदी गलियाँ में। म्हाँनै भेजो...।

धमाल-१४१,

लीन्या भगवाँ गोपीचंद राजा जोगी रै बण्यो।
सिर पर भगवाँ टोपी तन में भगवाँ झूगलो रै,
पगां में खड़ाबू राजा अवधू रै भयो।
गल़ में तो घाल्या राजा झोल़ी रै झंडा,
माता के म्हैलाँ में भिछ्या ल्यावण रै गयो।
माता के हाथ की जोगी लीनी दूद भिछ्या रै,
रमादेई माता हूँ बो बिदा रै भयो।
माता के म्हैलाँ हूँ जोगी दग २ उतरयो रै,
राणी के म्हैलाँ में दगदग चढ़ रै गयो।
रूप तो देख राणी रोवण लागी रै।
अमर दुहाग म्हानै किण गुन्ने दियो।
कँवर खिलावो ओ राणी हरगुण गावो ओ,
म्है तो म्हारै राम जी रो मारग लियो।

२४/४/४३ धमाल-१४२,

धाड़ो दोड़यो यो डूँग जी बठोठ वाल़ो रै।
सीकर लूट राम गढ़ लूट्यो रै,
तोड़यो र आगरो फिरंगीवाल़ो रै।
अेवड़ छेवड़ फोजाँ लड़ै रै फिरंगी की,
बीच में यो डूँग जी बठोठ वाल़ो रै।

आगली मूराँ में यो तो लड़े रै लोटियो,
पाछली मूराँ में करणू मीणाँ वालो रै।
सवा तो पहर खांडो खुड़क्यो रै डूंग को,
लाल किलो लंका ज्यूँ तोड़्यो आगरै वालो रै।
लाल किले में डूंग फेरी रै दुहाई।
तो नाँव कढ़्यो हिंदू नार बठोठ वालो रै।

धमाल-१४३,

इसड़ी-सी रावटी चिणा यो मेरा ढ़ोला पूँन
कलरक्याँ आवै।म्हाँने गरमी रै नाँप सुहावै।
गरमी में कोमल मेरी काया रै पसीजै
धण रो जिव घबरावै। म्हाँनै गरमी...।
अंगियाँ तो चूई मेरो भीज्यो रै पोमचियो,
ढुलक पसीनूँ म्हारै रै आवै।
चंदा कै बरोबर ढ़ोला चाँदाँ रै चिणायो,
अमरिया री छाँन रै छुवावै।
जितणाँ तो तारा ढ़ोला उतणी मोरी राखो जी,
सूरज ऊपर चेल रै चुवावै।
नींचो ही नींचो सूरज उगै रै पूरब में,
नींचो नींचो पीछम में छिप ज्यावै।
कदे येनी थारी धण नै गरमी लागै,
नाँप यो पसीनूँ आवै।

धमाल-१४४,

काली बदली या आई म्हारै बरसण नै।
अम्मरपर हूँ या उतरी रै बदली,
तो छांन्या ऊपर छाई अपरी पंखण नै।

अेक बूँन गेरी बदली दोय बून गेरी रै।
मदरी मदरी गाजी गाजबण दरसण नै।
बादली री गाज म्हारै लागी रै कालजै,
तो मारूजी नै लागी गोरी तरसण नै।

पठ्यम गौड़
११/५/४३

धमाल- १४५,

५/५/४३. केसर ल्यादे मेरा स्याम सुवा मण।
आदी आदी केसर मैं तो घरूँ रै,
ओलाँतर। आदी आदी घोलूँ रै बरतण।
केसर ल्यादे मेरा पोन सवा मण।
लेय पिचकारी आपाँ फागण खेलाँ,
रँग- मैड़ी में रै दोय जण।
केसर घोलाँ हो स्याम सुवा मण।
ऊँची मैं जायर चढूँ रै झरोखै,
केसर भर भर ऊडूँ रै थारै तन।
केसर ढोलूँ ढोला रँग रै मैल में,
या आई रै म्हारै मन।
थे तो कानाँ ढोला बण कर आवो रै,
कान जी। मैं आवूँ राधा बण।
केसर ल्यादे मेरा स्याम सुवा मण।
हाथ जोड़ कर अरज गुदारै रै,
या थारी जी गोरी धण।

धमाल - १४६,

मैं बैठी मेरा स्याम अलूँणी।
साँवण बीत भादवो बीत्यो,
तीज्याँ गई रै अलूँणी।
आसोज बीतर कातिक बीती,
दीवाली या गई रै अलूँणी।
मींगसर बीतर पो-मा बीत्या-।
गई संकराँत रै अलूँणी।
फागणियूँ मेरो झुर-झुर बीतो,
होली बी या गई रै अलूँणी।
चेत मास में मैं चैन न लीन्यू,
गई गणगोर रै अलूँणी।
पल पल में मैं काग उडावूँ,
अब म्हाँनै करो रै सलूँणी।

६।५।४३ धमाल - १४७,

मैं भूखी रै बालिम की।
रोटी नहीं भावे म्हाँनै, फलको नहीं भावै,
सूरत भावै भो बालिम की।
मैं भूखी रै बालिम की।
जल नहीं भावे म्हाँनै, दूधो नहीं भावै,
म्हाँनै माल ओवै रै बालिम की।
कपड़ो ना सुहावै म्हाँनै लत्तो ना सुहावै,
सूरत सुहावै बालिम की।
अन नहीं चाये, म्हाँनै धन नहीं चाये,
दरस चाये हो बालिम की।

धमाल-१४८,

बणवादे मेरा स्याम, लाल कुड़ती ।
घोराँणी बो पहेरे मेरी जिठाणी बो पहेरे ओ,
पाड़ोसण के सोहे या लाल कुड़ती ।सिमवादे...।
देवरियो तिरसो ओ गोरी बीकाणै रो हाकिम ओ,
जेठ जी तिरसो यो जोधाँणू लौरे ओ ।
मैं बाऊं ओ गोरी हल यो धवले को ओ,
काती में सिमा यूँ थाँने लाल कुड़ती।
सिमवादे मेरा साल लाल कुड़ती ।

धमाल-१४९,

नित तरसै यो मन थारी गोरी को नित तरसै।
मालपुवै को टुकड़ो म्हाँनै पाड़ोसण चखायो जी,
घी में तळवाँ मालपुवो रोठाँ हूँ फूस्यो जी ।
नित चौले यो मन थारी गोरी को नित चौले।
रसड़ो मालपुवो ढ़ोला म्हौरे तवे उतरायो जी
दे दे मैं जेट भडूँ कूँडो। नित तरसै जी...।
रसड़ा मालपुवा ढ़ोला थारी रसोयाँ करावोजी,
गोरीधण परोसै यो जीमै ओ रसियो।

गीत-१५०,

oen.
[१५।२।४३. गठियाँ का दोय कपार भवादे रसिया ।
अेक आँगण अेक च्याँनण चोक भवादे ओ,
अेक आगै अेक पाछा नै भवादे ओ,
गोरीधण हरख करै रसिया। गठियाँ का...।

नणदल हाथ सिंचादे ढोला, देवर हाथ सिंचादे ओ,
मालीड़ा ने हाथ पोध लगवादे रसिया।
गैलाँ ने जाऊँ तो ढोला गठियो फाड़र
ल्याऊँ ओ, आगे नै जाऊँ तो गुनली रसिया।
सुसरो जी आवें तो ढोला गठियो रोटी घालूँ जी।
सासू जी आवें तो गुनली ओ रसिया।
जेठ जी आवें तो ढोला गठियो रोटी घालूँ जी,
जिठाणी आवे तो गुनली ओ रसिया।
देवरियो आवै तो ढोला गठियो रोटी घालूँ जी,
देराणी आवे तो गुनली ओ रसिया।
नणदोई जीमै तो ढोला गठियो रोटी घालूँ जी,
नणदुली जीमै तो गुनली ओ रसिया।
थे जीमो तो थाँनै गठियो रोटी घालूँ जी,
मैं जीमूँ तो गुनली ओ रसिया।

गीत-धमाल-१२१,

घर आवो मेरा स्याम झुरै ओ गोरी।
झुरती तो झुरती ढोला झूर मरैली ओ,
जीवती मिलैगी या थाँनै जी गोरी।
अब आवो मेरा स्याम झुरै ओ गोरी।
सूरज उगता ढोला चढ़ चोबारै बैठूँ जी,
झाड़ झाड़ मैं देखूँ त्यौरी।
साँझ पड़्याँ मैं ढोला नीचै पाछी उतरूँ जी,
बाटड़ली उडीक मैं रहूँ कोरी।
मुड़ आवो मेरा स्याम झुरै गोरी।
पलक पलक ढोला म्हाँनै दूबर होरी जी,
बालंजोगी रातड़ी घणी या दोरी।
साँवणियाँ में आयाँ ढोला पीजरियो मिलैगो ओ,
भादूड़ा में आयाँ या हाड़ाँ की ढेरी।

धमाल-१५२,

याँणाँ याँणाँ रे जसरथ घर पाँवणाँ।
हाथी रे घोड़ा ऊँट पालखी,
रथ पर चढ़-चढ़ आँवणाँ।
याँणाँ याँणाँ रे जसरथ घर पाँवणाँ।
गाजा रे बाजा भेर सहनाई,
नोपत ढोल घुराँवणाँ।
देस देस का रे राजा बी आया,
आया रे रिसी बड़ पाँवणाँ।
रोंदे माँय कूँवर जसरथ का,
जाँ पर चँवर ढुलाँवणाँ।
धन मिरजा या धन धन नगरी,
धन ओ जिनक बड़ भागणाँ।
जाँकी सीता को सुभंबर रचावणाँ।
जाँके राम सरीसा आया पावणाँ।

धमाल-१५३,

म्हाँनै सायब की भल़ आवै।
मछल़ी नै जल़ की, मींडके नै जल़ की,
ज्यूँ पल़ पल़ भल़ आवै।
म्हाँनै परणे की ओल्यूँ आवै।
मिरगी नै बण की, मिरगले नै बण की,
ज्यूँ छिण छिण भल़ आवै।
म्हाँनै मारू जी की याद सतावै।
कोयली नै बाग की, सूवटिये नै बाग की,
ज्यूँ छिण छिण भल़ आवै।
टींटड़ी नै मेवाँ की, पपैये नै मेवाँ की
ज्यूँ पल़ पल़ भल़ आवै।

धमाल-१५४,

Thursday,
२०।५।८३.

अमवै को पेड़ मेरै आँगण में अमवै को ।
रुत आई अमवै फल लाग्या,
भान भयो मेरै आँगण को ।
देस देस का पंछी आया,
बे बी सुधारैं मेरै आँगण को ।
लेय सुवटो कोयलड़ी आई, बा बी फल खाय
मेरै अमवै को ।
जेठ जी नै लेय जिठाँणी आई,
बा बी फल खाय मेरै अमवै को ।
देवरियर नै लेय घोरणी बी आई,
बा बी फल खाय मेरै अमवै को ।
नणदोई नै लेय कर या नणदल आई,
बा बी फल खाय मेरै अमवै को ।
पाड़ोसी नै लेय कर या पाड़ोसण आई,
बा बी फल खाय मेरै अमवै को ।

धमाल-१५५,

सोनाँ की रे नाथ घड़ादे रसिया रै सोना की।
साच्चै गज मोतीड़ाँ जड़ादे रसिया रै सोनाँ की ।
ऐसी ऐसी नाथ थारी गोरीधण कै सोहै जी,
पहर कर आँगण में डोलै सोनाँ की ।
ऐसी ऐसी नाथ थारी मारूणी कै सोहै जी,
पहर कर सेरल्याँ बैठै सोनाँ की ।
ऐसी ऐसी नाथ भारी गोरड़ी कै सोहै जी,
घार-जिठाणी देखैं नाथ सोना की ।

ऐसी ऐसी नाथ थारी मरवणी के सोहै जी,
नार स्यूँहार पहरै नाथ सोनाँ की।
ऐसी ऐसी नाथ थारी बालक धण के सोहै जी
साथना ने पहर दिखावै सोनाँ की।

धमाल-१५६,

कदयूँ करसी यो मेग सिखर गरजै रै कांई करसी।
मूँसल धारा मेव बरसासी, आँगण माँय परीण्डा भरसी।
नाला रै खाला बेग भवासी, जोहड़ा छिलमिल मरस्यासी
खेताँ रै बाड़ाँ, ढैराँ रै खेताँ, मोठ बाजरी बिजवासी।
च्याँरू कूँट अेकसी करसी, हरियल घासा उगवासी।
रूपली गायर रूपला बाछा, रोबिड़ियाँ में चरवासी।

धमाल-१५७,

—— धीरज धर नर सुख पावैगो।
धीरज धर्यो रै हरीचंद राजा ओ,
मरतर नीर भरावैगो।
राणी पुतर जलावै राजा पैलाँ कफन
मांगैं रै। स्यारथ करण जद हर आवैगो।
धीरज-धर पैलाँ दुख पावै, अंत समय सुख
पावैगो। धीरज धर्यो यो कँवर पहलादै रै।
धणी रै बो तिराछ दिरावैगो। खम्ब फाड़
हिरणाँ कुस मोरै रै स्यारथ करण हर
आवैगो। धीरज धर नर सुख पावैगो।
धीरज धर्यो रै बो धूजी राजा ओ,
बण में धूँणी रै रमावैगो। धूँणी रै
पर हूँ परो हरधर, राज देण हर आवैगो।

Friday,
२१।५।८३.

धमाल-१५८,

बुड्ला रे अब राम सुमरले ।
घणीं रे गई उमर रही थोड़ी,
करणी रे रोय सो करले ।
बुढ्ला रे अब राम सुमरले ।
छोड़ सार बेटे पोताँ को, सार नाँव की करले ।
बुढ्ला रे तूँ राम सुमरले ।
छोड़ मिमत थारे धन-दोलत की
मिमत नाँव की करले । बुढ्ला रे रनाँव ।
छोड सोच तूँ घर धंधे को,
सोच नाँव को करले । बुड्ला रे... ।
तोड़ जाल सब मो-माया को,
मजल करारी तिरले ।

धमाल-१५९,

किसन कहे दुरजोधन राजा,
मानो थे बात हमारी ।
पाँच गाँव पँडवाँ ने दे द्यो
ओर जमी सब थारी
राजा मानो थे बात हमारी ।
कूँण तूँ पंच कठे को रे राजा,
क्यूँ थारी मत मारी ।
के मागें बे पाँचू पाँडू,
सगळी भोम हमारी । राजा मानो... ।
सूई की अणी रे बरोबर भोमी
पंडवाँ ने धूँ नहीं न्यारी ।
जुद करकी बे सगळी लल्यो, या हे बात हमारी ।

धमाल-१६०,

रण जुरा रै डाकणी हाण्डै ।
घोड़ा रै गरकै, हाथी परकै,
खड़ी रै खेत में हाण्डै ।
रण जुरा रै डाकणी हाण्डै ।
बिरमा बी भाग्या रै, बिसनू बी भाग्या,
कोई रै नहीं पग माण्डै ।
या जुरा रै डाकणी हाण्डै ।
झोली झण्डा ले सिव जी भाग्या,
चढ्या रै नादिये ढाण्डै ।
पाँचू पाण्डू रण कदे न हारया,
कदे न हारया खाण्डै ।
बाँ पण्डवाँ बी पीठ दिखाई,
राण्ड मायजनू माण्डै ।
रण जुरा रै डाकणी हाण्डै ।
जद हलदर जी हलियो ठायो,
घाल जुरा गल़ बाण्डै,
ऊपर हूँ मूसल़ ठरकायो

धमाल-१६१,

राजा लागै लागै जेठ हमारो ।
भायाँ को बैर भायाँ हूँ काढ़ो
भूवाँ पर हाथ मत डारो ।
राजा लागो २ जेठ हमारो ।
मैं नारी थे करो उघाड़ी,
अदब देखस्यो म्हारो ।

या दुनियाँ थांने डुलखैगी,
कुल लाजैगो थारो।
मैं निबली थे सबल घणेरा,
के बस चालै म्हारो।
राजा लागै लागै जेठ हमारो।
जिण हाथाँ मेरी रिच्छा करिये,
उण सैं चीर उतारो।

धमाल-१६२,

Dat.
२२।२।४२. सरवण म्हाँनै तीरथ करादे।
म्हे मायत तेरा बूडो बूडी,
तिरथाँ माँय तुरादे। सरवण म्हाँनै तीरथ करादे।
ओर बात सब मन की निकसी,
या मन की रै कढ़वादे।
सरवण म्हाँनै तीरथ करादे।
म्हे ऊमर के नाके रै बैठ्या,
पछलो धरम निभादे।
सरवण म्हाँनै तीरथ करादे।
तूँ म्हारो समरथ बेटो है,
जलम सुफल करवादे।
सरवण लाला न्हाण करादे।
तेरो बेटा भलो रै जुगे जुग होयो,
चोथी रै म्हारी ओड़ निभादे।
सरवण म्हाँनै तीरथ करादे।

धमाल-१६३,

सरवण या कावड़ घड़ाई ।
बाँस कटायर आसो रै घड़ायो,
काँधै- बली रै बणाई ।
सरवण या कावड़ रै घड़ाई ।
रोपे-चनण का दोन्यू रै छाबड़ा,
रेसम खोल रै चढ़ाई ।
काँचे सूत की डारी रै कराई
रेसम डोर रै बँटाई ।
सरवण या कावड़ घड़ाई ।
आगे रै पालड़ै बाप बठायो,
लैरां रै माँय बठाई ।
सरवण या कावड़ उठाई ।
काँधै रै कावड़ लेकर चाल्यो,
तिरथाँ में सुरत लगाई ।

धमाल-१६४,

मेरी स्याहय करो गिरधारी ।
भरी रै सभा में लाज गमावै,
दुसटी करै रै उघाड़ी । अब स्याहय करो...।
करण दरोण सभी चुप बैठ्या,
देखै यो भिसम तप धारी ।
मेरी स्याहय करो गिरधारी ।
पाँचूँ पाँडू भया रै निजोरा,
नाँय लगै बाँ हूँ कारी ।
अब स्याहय करो बनवारी ।
मेरी रै लाज कै सागै ही या,
जावैगी लाज तिहारी ।

धमाल-१६५,

Monday,
२४।२।८३. मेरी तीन बात रही मन की।
मरतो यो रावण बात बतावै,
सुणो हो राम मैरे मन की।
मेरी तीन बात रही दिल की।
पैली बात मेरी रही अधूरी,
सोनाँ रै माँय सुगन की।
मेरी तीन बात रही मन की।
दूजी रै बात मैं अलबत करतो,
अगनी बिन धूँवन की।
मेरी तीन बात रही मन की।
तीजी रै बात मेरी रही या अधूरी,
पैड़ी रै मैं चिणतो गिगन की।
ईँण जिनगी को नहीं ठौर रै ठिकाणूं,
आस नहीं पल छिन की।
करणूं होय सो झटपट करले,
या नीती चतरन की।

धमाल-१६६,

माधो गुजर्याँ नै जाय कहो रै।
ऊधो गुजर्याँ नै जाय कहो रै।
पै तड़कै मथरा जी जावो, यो समचार गहो रै।
ऊधो गुजर्याँ नै जाय कहो रै।
ढलती रात थे पैण्डो पकड़ो,
रात्यूँ रात बहो रै। ऊधो गुजर्याँ...
तज को मोह मनें सब भूलैं,
ना बै बियोग धंरो रै।

अेक बिछड़ै अेक मिलै रै जगत में,
यो धारो नित को रै।
थारो रै मन मूँठी में लेल्यो।
समत्था पकड़ रहो रै।
जे बीत्या दिन याद ज आँवैं,
तो छाती पकड़ सहो रै।

धमाल-१६८,

थाँरे मन की थे बात बतावो रसिया थाँरे मन की।
कद जावोगा थे तो गढ़ जोधाँणै,
कद थे जीन कसोगा रसिया।
थाँरे मन की, थाँरे मन की थे बात बताजो रसिया।
आदी आदी रात पहर को तड़को,
थे निनरा में सोवो अे गोरी।
थाँने मन की, थाँने मन की बात बताऊ गोरी।
रलवाँ-सी मैलाँ हूँ उतरूँ,
घुड़लै जीन मंडावूँ, गोरी। थाँने मन की...।
थाँनै मर निनरा में छोडूँ,
मैं जोधाँणै जाऊँ, गोरी। थाँनै मन री।
साँवण बीत भादवो बीतै तो,
कातिक में घर आऊँ, गोरी। थाँने मन की
आदी आदी रात पहर के तड़कै,
तो सूती नै आय जगाऊँ गोरी।
थाँनै मन की, थाँनै मन की बात बताऊँ गोरी।

धमाल-१६८,

मेरी म्हाणी, मेरी म्हाणी में चूलो घलवादे रसिया।
सोनाँ रो यो आँगणू घलादे तो,
ऊपर हींगलू ढुलादे, रसिया।
मेरी म्हाणी, मेरी म्हाणी रसोई करवादे रसिया।
मिसरी का दोय ठीया रे करादे, मिसरी का दोय ठीया करादे
गुड़ को लेव फिरादे रसिया मेरी म्हाणी।
मेरी म्हाणी, मेरी म्हाणी में चूलो घलवादे रसिया।
काली रे कलम का चोगठा घड़ादे,
काली रे कलम का चोगठा घड़ादे,
तो चनण किंवाड़ चढ़ादे रसिया मेरी म्हाणी।

धमाल-१६९,

2day,
२।४३. तूँ मरज्या ओ लीली ठाँण खड़ी तूँ मरज्या।
रिपिया मैं गाँठी हूँ देयर, थाँने मुलाकर कुबद करी।
तूँ मरज्या, तूँ मरज्या ओ लीली ठाँण खड़ी तूँ मरज्या।
घर का ओ दाम गिरै हूँ कारया,
तो थाँने बिसायर कुबद करी। तूँ मरज्या...।
भर भर कूण्डा दूदो ओ पायो,
भर भर कूण्डा दूदो ओ पायो
तो खड्याँ मैं चराई थाँने दूब हरी तूँ मरज्या।
तूँ मरज्या ओ लीली ठाँण खड़ी तूँ मरज्या।
म्हारै ओ हाथाँ पाली पोसी तो
अब तूँ म्हारी सोक बणी तूँ मरज्या।
तूँ मरज्या ओ लीली ठाँण खड़ी तूँ मरज्या।
म्हारै ओ स्याम नै पीठ चढ़ायर,
म्हारै ओ पिया नै तूँ बिलमाकर,

उड उड रे हरिया सूवटिया उड उड रे।
थारो रे सूवटिया हरयो रे रंग रे,
हरयो रे डुमालो म्हारे सायब को उड उड रे।
उड उड रे हरिया सूवटिया उड उड रे।
थारी रे सूवटिया तीखी रे चाँचड़ी तो,
तीखी रे नाक म्हारे सायब की उड उड रे।
थारे रे सूवटिया गल़ गल़कंठी तो,
गले रे गोप म्हारे सायब के उड उड रे।
थाँने रे सूवटिया माल़ माल़ कर,
ओल्यूँड़ी सतावे म्हारे सायब की उड रे

पतराम ठाकुर
१५/७/८३

साँम्ह सुबै लेय ज्याय परी भे तूँ मरज्या।
तू मरज्या भे लीली ढाँण खड़ी तूँ मरज्या।
कदे येक तूँ ले ज्याय बण खंड में,
कदे येक तूँ लेय ज्या भे बण खंड में,
कदे येक हरिये बाग परी भे तूँ मरज्या।
तूँ मरज्या भे लीली ढाँण खड़ी तूँ मरज्या।
कदे येक तूँ बीकाणै ले ज्या, कदे येक तूँ जोधाणै भे परी
तूँ मरज्या। तूँ मरज्या भे लीली ढाँण खड़ी तूँ मरज्या।

धमाल-१७०,